श्री कान्ति कमल पुष्प मालाङ्क ७

श्री जिन गुरु गुण सचित्र पुष्प माला

संपादक

जगम युग प्रधानभट्टारक जैनाचार्य श्री श्री

१००८ श्रीमज्जिनकरि

सागर सूरीश्वरजी महाराज साहब के

शिष्य रत्न

व्याख्यान वाचस्पति शासन प्रभावक

१०८ मुनिराज श्री

कान्तिसागरजी महाराज साहब

दिल्ही निवासी श्रीमान कस्तूरचंदजी श्रीमाल की

धर्मपत्नी सौभाग्यवती श्रीमती मीनादेवी एवं

सुपुत्री श्री इलायचीबाई के उपधान तप

निमित्त भेट

संवत २०१७ पालीताणा श्री सिद्धाचल महातीर्थ

प्रकाशक —

श्री कान्ति दर्शन ज्ञान मन्दिर

नागौर (राजस्थान)

शिष्यरत्न
शिष्यरत्न
जन्म १९४९, दिक्षा १९५७
आचार्यपद स्वर्गवास-
[सं १९९२ - सं २००६]
जन्म १९६८ दिक्षा १९७६
जन्म १९८४ दिक्षा २००२
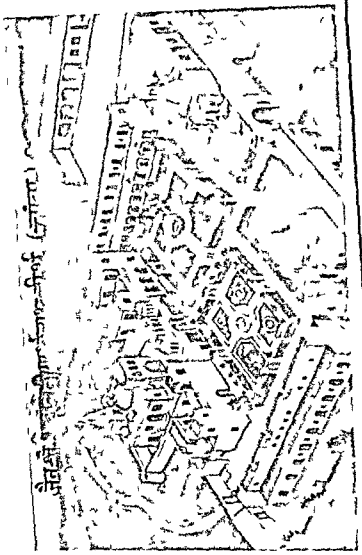
चित्र न. २ में

आपके समक्ष श्री भद्रावती तीर्थ का यह भव्य मनोहर चित्ताकर्षक चित्र है। गगनचुम्बी श्री केशरिया पार्श्वनाथ का विशाल जिनालय, अति प्राचीन दादा गुरुदेव की दादावाडी, चारों तरफ धर्मशाला, बीच में मनोसुखकारी बगीचे, नाहर नव्य-निर्मित औषधालय आदि से यह तीर्थ शोभित है। इस तीर्थ का मुख्य द्वार नागपुर के लाट अंग्रेज ने धरणेन्द्र के चमत्कार को प्राप्त कर बनवाया है। वर्तमान में यह तीर्थ महान् चमत्कारी है।
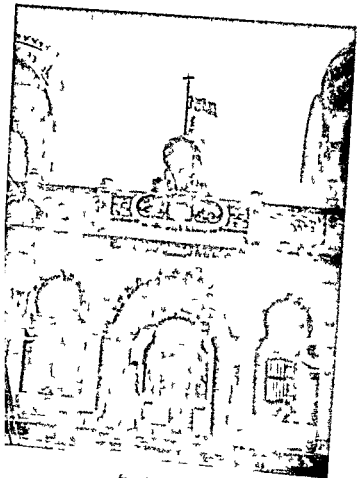
चित्र नं ३

चित्र नं. ३ में

आप देख रहे हैं वह जिनालय के द्वार का है। द्वार पर जाते ही यात्री का चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। ऊपर देखते ही फणाकार धरणेन्द्र के नीचे जैन शासन का सार, पंच पर केष्ठि का बीज ॐ के दर्शन होते हैं। द्वार के अन्दर घुसते ही बाईं तरफ भैरुजी का स्थान है जो कि इस तीर्थ का रक्षक वर्तमान में भी अनेकों का संकट हर्ता सम्यक्त्वधारी इष्टदेव हैं, दाहिनी ओर जिनालय के मध्यम रंगमंडप में लाखों रुपयों के समुचित व्यय से महान् प्रभाविक पुरुषों के जीवन के अमूल्य आत्मोन्नति-कारक चित्रों का रंगीन आलेखन वर्णन है जिसे देखते ही यात्री आत्मविभोर होकर आत्मसाधना में लब्धलक्ष बन जाता है।
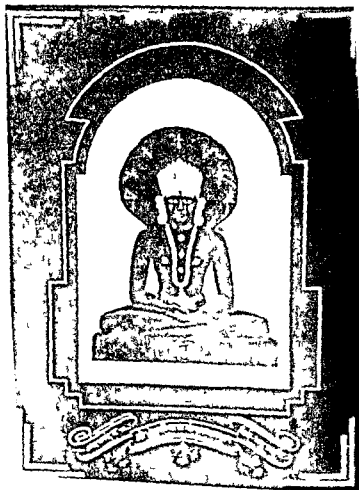
चित्र नं ४

चित्र न. ४

के आप दर्शन कर रहे है यह है श्री भद्रावती केशरिया पार्श्वनाथ। प्राचीन काल में इस स्थान का नाम भद्रावती ही था, ऐसा ऐतिहासिक प्रमाणों से प्रतीत होता है महाभारत तथा जैमिनी कथासार में भी भद्रावती तीर्थ का उल्लेख आता है। कलिंग देश के जैन सम्राट् खारवेल का भद्रावती की ही राजकन्या ब्याही गई थी। गाँव से मील भर के फासले पर एक पहाडा है उसमें एक दूसरे से मिली हुई तीन गुफाएँ है। गुफाओं की दिवालों में तीनों तरफ तीन पद्मासनस्थ सात फुट के ऊँचाई में बडी-बडी मूर्तियाँ उत्कीर्ण है। यह एक प्राचीन गुफा है। इसे वाकाटक की गुफा कहते है। इस्वी सन ६२९ से ६३९ तक मध्यप्रदेश का निरीक्षण करने वाले चीनी प्रवासी विद्वान् हुऐनत्सांग ने लिखा है कि भद्रावती का राजा क्षत्रिय था। वह अत्यन्त विद्याप्रेमी, कलाप्रेमी, व परमधार्मिक था। बडे बडे मंदिर व विद्यालय थे। प्राचीन भग्नावशेषों से निकलने वाली सामग्री से ज्ञात होता है कि यह एक समय में बडा भारी नगर था, जिसके स्मृति चिन्ह पुरातन संस्कृति की आज भी याद दिलाते है। यहाँ पर मौर्य, गुप्त, आंध्र, राष्ट्रकूट, चौलुक्य आदि के पश्चात् गोंड राजाओं ने राज्य किया था। अन्त में भोसलों ने भी शासन किया था। अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ के मैनेजर श्रीमान् चतुर्भुज भाई को धरणेन्द्र देव स्वप्न देते है कि विच्छेद भद्रावती तीर्थ को प्रकट कर उद्धार करो। वे भी स्वप्नानुसार वन वन में घूमते है। अन्त में नागेन्द्र प्रत्यक्ष हो कर श्री पार्श्वनाथ के दर्शन कराते हैं फिर चाँदा, वर्धा, नागपुर आदि के भक्तगण आकर इस कार्य को हाथ में लेकर तीर्थ का उद्धार करते हैं। यहाँ पर २३०० वर्ष की प्राचीन प्रगट प्रभावी श्री पार्श्वप्रभु की धरणन्द्र के फणाना से युक्त ६२ इंच की यह मूल नायक प्रतिमा है जिसके दर्शन कर साधक आत्म कल्याण में तत्पर हो भावनाओं में तल्लीन हो जाता है। आजकल यह तीर्थ भारत भर में विख्यात व लाखों रुपय इस तीर्थ पर लग रहे हैं इसका अधिक श्रेय चाँदा निवासी श्रीमान् चैनकरणजी गोलेच्छा भद्रावती तीर्थ कमेटी के सभापति को है।

चित्र न ५

चित्र न. ५ में

आप प्रकट प्रभावी एक लक्ष तीस हजार नव्य जैन निर्माता दादागुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि के दर्शन कर रहे हैं। यह प्रतिमा अजमेर तीर्थ की दादावाडी में सुप्रतिष्ठित है। यह मूर्ति ७०० वर्ष से भी प्राचीन है अत्यन्त चमत्कारी व अनेकों के मनोवाञ्छित पूरनेवाली है। कई भव्यात्मा इस प्रतिमा के समक्ष एकाग्र ध्यान मग्न हो फलसिद्धि प्राप्त करते हैं।
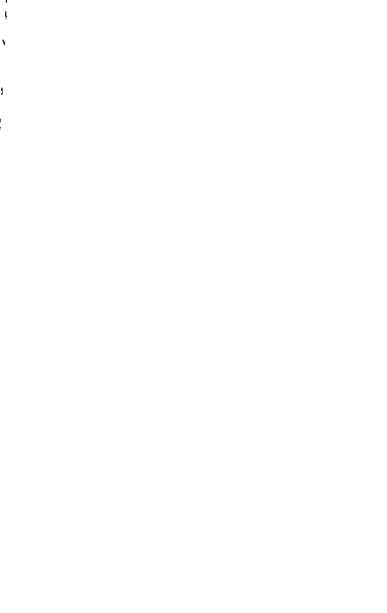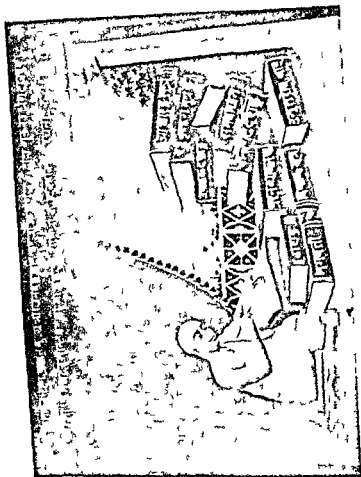
चित्र नं. ६

में जैनागम रहस्य प्रकाशक नवअंगी टीकाकार स्थंभन पार्श्वनाथ तीर्थ प्रकट कर्ता समर्थ विद्वान् खरतरगच्छाचार्य श्री अभयदेवसूरीश्वरजी महाराज है। आपके शरीर में कुष्टरोग हो जाता है तब आप गिरनार पर्वत पर जाकर अनशन करने का विचार करते हैं। अट्ठम तप होते ही श्री शासनदेवी प्रकट होकर कहती है कि गुरुदेव अभी तो आपकी जैन शासन को आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता है। आपके बिना जैनागमों के अर्थ को कौन प्रकट करेगा। तब गुरुदेव ने कहा, मेरा शरीर तो रोग से ग्रसित है। तब देवी कहती है कि आप स्थंभन तीर्थ पधार कर पार्श्व के तीर्थ को प्रकट करो, आपका रोग मिट जायगा। पश्चात् श्री अभयदेव सूरीश्वरजी महाराज स्थंभनपुर जाकर अपने चारित्र व तपोबल से धरणेन्द्र को प्रसन्न कर महाप्रभावक गर्भित श्री जयतिहुअण महास्तोत्र की रचना करते हुए १७वीं गाथा के जय शब्द के उच्चारण करते ही महाप्रभाविक श्री पार्श्वनाथ भगवान का अति प्राचीन बिंब प्रकट होता है उसका स्नात्र जल से कुष्ट रोग नष्ट हो स्वर्ण सुन्दर शरीरप्राप्ति के पश्चात् आप जैन शासन के गंभीर एवं गहन नव अंग सूत्रों के ऊपर टीका की रचना कर, जैन समाज को श्रमण भगवान महावीर की वाणी से लाभान्वित कर, जैन शासन की महान् सेवा करते है। आपके समक्ष जैन मूल सूत्रों की टीका करते हुए श्रीअभयदेव सूरीश्वरजी विराजमान है। आप विक्रम की १०वीं शताब्दि में विद्यमान थे।
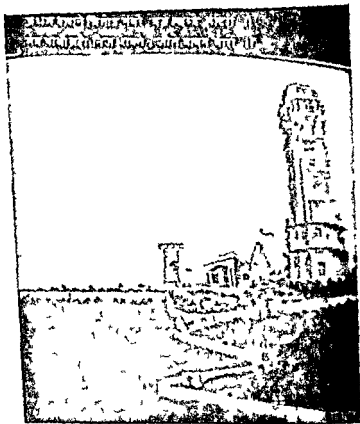
चित्र नं ७

चित्र न. ७ में

प्रथम दादागुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज चितौडगढ के वज्रस्थंभ में से अनेक प्रकार की विद्याओं से युक्त प्राचीन ग्रन्थ को अपने योगबल से ग्रहण कर रहे हैं इस ग्रन्थ के फलस्वरूप आप जैन शासन की अनेक प्रकार से प्रभावना कर जैन शासन की वृद्धि करेंगे। इस ग्रन्थ का महान् प्रभाविक श्रीवज्रस्वामी ने इस ग्रन्थ की योग्यता वाले शिष्य की अनुपलब्धि के कारण चितौड गढ में वज्र स्थभ में इसे सुरक्षित रख दिया था। परम्परा से इस बात को सुनते हुये दादागुरुदेव इस ग्रन्थ की प्राप्ति का उद्याग करते हैं और सफलता की सिद्धि कर जैन शासन की उन्नति में तत्पर होते हैं।

चित्र न ८ मे

मैं प्रथम दादा गुरुदेव के दर्शन साधनावस्था में आपको हो रहे हैं। वज्रस्थभ से योग द्वारा अमूल्य ग्रन्थ की प्राप्ति के पश्चात् जन शासन के अष्ट प्रभाविकों म से सप्तम प्रभाविक सिद्धि की साधना करते हुये पजाब देश के पच नदी के बीच आप्न रुगा ध्यानमग्न होते हैं। उसके बाद उन पाचो नदियों के अधिष्ठायक पीर आकर उपद्रव से चलायमान करने पर भी अक्षुब्ध देख कर सेवक बन जाते हैं, और आज्ञाधारक बन हाथ जोड सन्मुख खडे हैं। उसके बाद गुरुदेव बावन वीरों को सिद्ध करते हैं। वह भी उग्र उपद्रव करता हुआ दृष्टिगत हो रहा है। अन्त मे वह भी आज्ञाधारक बन जाने पर ५२ वीर सेवक बन जाते हैं। इस चित्र म आप गुरुदेव को वज्रस्थभ से प्राप्त ग्र थ के वस्तु की सफलता के दर्शन कर रहे हैं।

चित्र न ९ मे

प्रथम दादागुरुदेव भक्तजनों को धर्मोपदेश सुनाते हुये एकाएक विचारमग्न हो जाते है तब भक्त श्रावक के पूछने पर कहा कि आज ६४ चौंसठ योगिनीयाँ उपद्रव करने आ रही है। यह अपने ज्ञान मे जानकर कहते है ६४ पट्टे लाकर बिछादो और उन योगिनियों का इन पट्टों पर बिठाना ऐसा कहकर उन ६४ पट्टों को अपनी शक्ति के द्वारा अभिमंत्रित कर पुन देशना आरम्भ कर देते है। वे योगिनीयाँ आकर बैठते ही पट्टों से चीपक जाती है व उठने म स्वशक्ति की असमर्थता प्रकट करती हुई क्षमा याचना कर आपकी शासन सेवा में हम शिरोधार्य आज्ञावाहिकाएँ रहेगी एसी प्रतिज्ञा कर स्वस्थान जाती है।
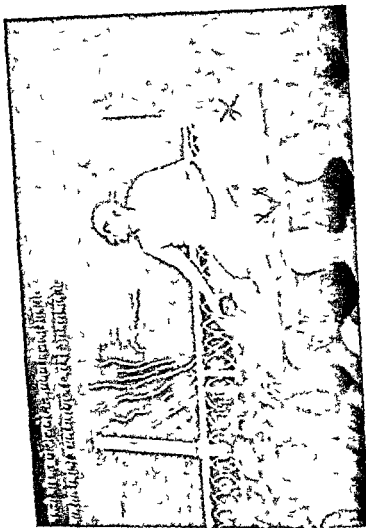
चित्र न. १० में

अजमेर नगर में सायकाल के समय पाक्षिक प्रतिक्रमण करते हुये बिजली के प्रकोप से जिनालय व उपाश्रय की रक्षा के लिये उस बिजली को अपने पात्र के नीचे स्थभित करते हुये आपके सामने प्रथम दादा गुरुदेव दर्शन दे रहे हैं।

चित्र न ११ मे

प्रथम दादागुरुदेव के द्वारा नउ नगर म जैन शासन की बढती हुई महिमा से जलकर कतिपय तुच्छ विचार के ब्राह्मणों ने जैन शासन की निन्दा कराने मरी गाय को जिनमंदिर सन्मुख रखदीं। प्रात काल पूजारी जाता है और मरी गाय को देखते ही घबराकर नगर शेठ के पास जाकर निदा होने का कारण बताता है नगर शेठ घबराता हुआ गुरुदेव के पास जाता है। गुरुदेव शीघ्र ही परकाय प्रवेशिनी विद्या द्वारा मृत गाय में जीवन सचार कर शिवालय के समक्ष भेज विद्यासहार लेते है। विद्या सहृत होते ही गाय वहीं गिर पडती है। सस्कृत की लोकोक्ति "परस्य खनति गर्ता तस्य कूप प्रमज्यते" अर्थात् दूसरे का खड्डा खोदे उसके खुदके लिये कुँआ तैयार होता है। वही बात आप इस चित्र में देख रहे है।
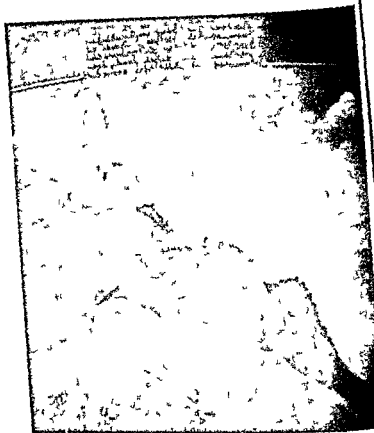
चित्र न १२

चित्र न. १२ मे

भयकर पर्वतमालाओ के नीच गिरनार नामक पर्वत पर अगड नामक श्रावक युग प्रधान की प्रतीति व दर्शन के हेतु अष्टमतप कर ध्यानमग्न हो जाता है। निस्वार्थ धार्मिक प्रवृति से प्रसन्न हो अना देवी प्रकट हो उसकी हथेली मे कुछ लिख देती है और कहती है जिसम इसका बचा ने की शक्ति हो उसे युग प्रधान समझना।

चित्र नं ९३

चित्र न. १३ मे

अनड श्रावक बहुत काल तक इधर उधर युग प्रधान की तलाश में घूमता फिरता जिनदत्तसूरि के पास आता है । उसके हाथ के अक्षरों को देखते ही स्वप्रशसा कैसे करें अत वासक्षेप डालकर कहते है जा नचाले तब शिष्य नाचता है —

दासानुदासा इव सर्वे देवा यदीय पादाब्जतले लुठन्ति
मरुस्थली कल्पतरुर्स जीयाद् युगप्रधानो जिनदत्त सूरि

इस प्रकार गुरुदेव में युगप्रधान की प्रतीति कर स्वकल्याण में तत्पर बनता है ।
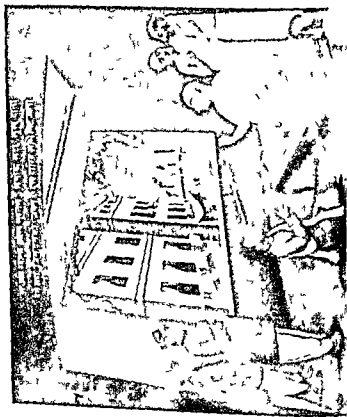
चित्र न. १४ में

सूरत नगर के एक बडे सेठ के लडके की नजर चली जाती है वह गुरुदेव के शरण आता है तब शक्ति सचार कर दृष्टि दान देते हुये प्रथम युग प्रधान दादा गुरुदेव के दर्शन आपके समक्ष है ।

चित्र नं १८

चित्र न. १५ मे

भरुच नगर में एक सुल्तान के पुत्र को सर्पदश से अचेतनावस्था प्राप्त हो जाती है। अनेक उपाय निष्फल होने पर उसे अग्नि सस्कार कराने श्मशान ले जाया जा रहा है वहीं पर सूरत के सेठ द्वारा दादा गुरुदेव की महिमा बताने पर उस कुमार को गुरुदेव के शरण ले जाया जाता है। स्वशक्ति से विष का विनाश कर प्राणो का सचार करते हुये प्रथम दादा गुरुदेव के आप दर्शन कर रहें हैं।

चित्र नं० १६
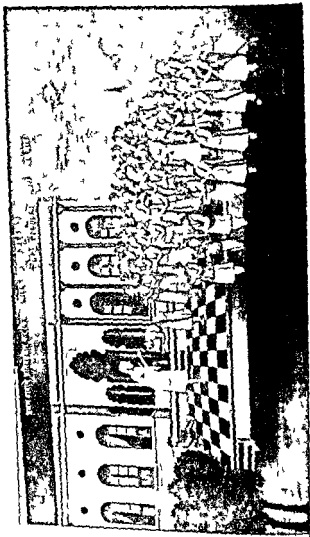
चित्र न १६ मे

प्रथम दादा गुरुदेव अपने जीवन की सिद्धियों से अनेकों
के कष्टर उसके फलस्वरुप जैन शासन की वृद्धि के लिये त्रिभुवन
गिरि के राजा कुमारपाल अजमेर के राठौर अर्णाराज सोमाजी
सिंहोजी आदि अनेक राठौट माहेश्वरी वगेरे को जैनधर्म की
वासक्षेप दे ओसवश मे वृद्धि कर जैन बनाते हुये दादा गुरुदेव
के दर्शनों से आप जैन शासन की वृद्धि के दर्शन कर रहे है ।

चित्र नं १७

चित्र न. १७ मे

प्रथम दादा गुरुदेव ने एक लक्ष तीस हजार नव्य जैन निर्मित कर ५७ गोत्रों की स्थापना कर शासन की वृद्धि की आप भी अपनी गोत्र को दृढ कर आप गुरुदेव के दर्शन कर कृतार्थ होवे।
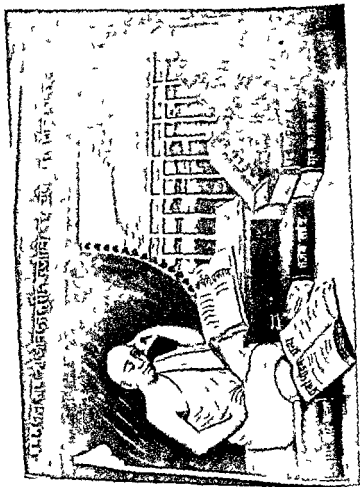
चित्र न. १८ मे

दादा गुरुदेव अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थों के निर्माण मे गम्य एव गूढ विषयों के अर्थ का सरलता पूर्वक प्रकट करते हुये विचारों में तल्लीन साहित्य सेवा म कालयापन करते गुरुदेव की साहित्य वृद्धि के आप दर्शन कर रहे है।

चित्र नं. १९ में

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज श्री संघ के साथ तीर्थयात्रा पधार रहे हैं रास्ते में सामने से जंगली भील लोग लूटने को आये देख एक श्रावक अर्ज करता है। उसको सुन कर-अपने डंडे से श्री संघ के चारों तरफ रेखा खींच कर श्री संघ को आश्वासन देते हैं। वे चोर लोग रेखा के मध्य कुछ भी न देखने से दूर दूर होकर चले जाते हैं श्री संघ की रक्षा करते हुये गुरुदेव आपके समक्ष हैं।
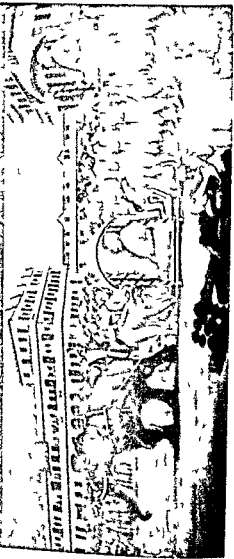
चित्र न. २० मे

द्वितीय दादा गुरुदेव ने अपने स्वर्गवास के पूर्व ही सघ को कहा था कि मेरी रथी को बीच वासा मत देना। शोकाकुल सघ भूल जाता हे और वर्तमान की मिहिरोली प्राचीन समय का दिल्ली का माणेक चोक था वहाँ पर बीच वासा दे देते है। फिर उठाने पर रथी उठती नहीं। सारे नगर मे समाचार प्रसृत हो जाता है। वहाँ के नवाब को भी मालूम होता है। रथी को हाथी जोता जाता हे फिर भी रथी नहीं उठती। तब वही पर अग्नि सस्कार का शाही फरमान होता है अेव ऐसे चमत्कारी महात्मा का प्रसाद हमे भी मिलें ऐसी व्यवस्था सैकडों वर्षों से भारत की स्वतन्त्रता तक [illegible]
हो रहे है।

चित्र नं: २१

चित्र नं. २१ म

तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशल सूरीश्वरजी गोरे एवं काले भैरव से सेवित अपने योगबल से वशीकृत भैरवों सहित आपको दर्शन दे रहे हैं।

चित्र न. २२ मे

भक्त श्रावकों के साथ नाव म वैठ नदी पार करते हुये वाचक श्री समय सुदरजी महाराज नीचे भँवर मे नाव के चक्कर खाने से अन्तिम समय जान दादा गुरु श्री जिन कुशलसूरि का दोनो हाथ ऊँचे कर याद कर रहे है अन्तर की आवाज सुनते ही दिव्य शक्ति द्वारा दादा गुरुदेव नाव को नदी के किनारे पहुँचा कर कष्ट दूर करते हुये आपके दृष्टि पथ मे है।
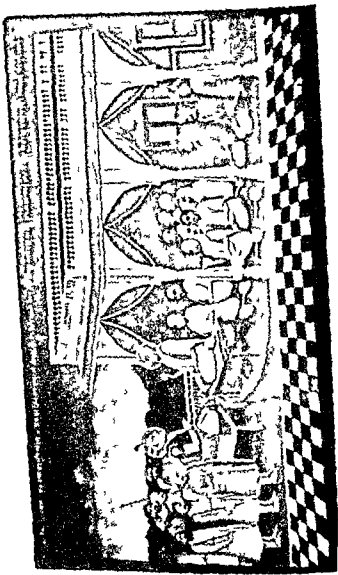
चित्र न. २३ मे

चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्रसूरी अकबर बादशाह को भारतीय दर्शनों के गूढ रहस्य को समझाते हुये एव अेकाग्रचित्त हो श्रवण करते हुये बादशाह का आप अवलोकन कर रहे हैं।

चित्र न० २४
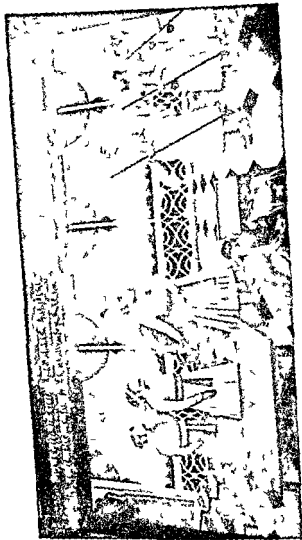
चित्र नं. २४ में

चतुर्थ दादा गुरुदेव के ज्ञान से प्रभावित अकबर गुरुदेव को अपने महल में आमन्त्रित करता हुआ एवं ईर्ष्यानल से दग्ध काजी ने गुरुदेव के पधारने के रास्ते में नाली के नीचे गर्भवती बकरी को रख, गुरुदेव को उसके ऊपर से ले जाने का प्रयत्न कर निंदा का दुष्ट आशय रखता हुआ, निंदा के अवसर की प्रतीक्षा में, उसी समय गुरुदेव ने कहा नाली के नीचे जीव हैं हम नहीं जा सकते। काजी ने पूछा कितने? गुरुदेव ने बताया तीन। गुरुदेव को असत्य प्रमाणित करने शीघ्र नाली का ढक्कन खोलता हुआ स्थान मुख से तीन जीव देख रहा है। गर्भवती बकरी नाली की गर्मी से दो बच्चे दे दिये। यह गुरुदेव ने अपने ज्ञान से जान लिया था। वही आपके समक्ष है।
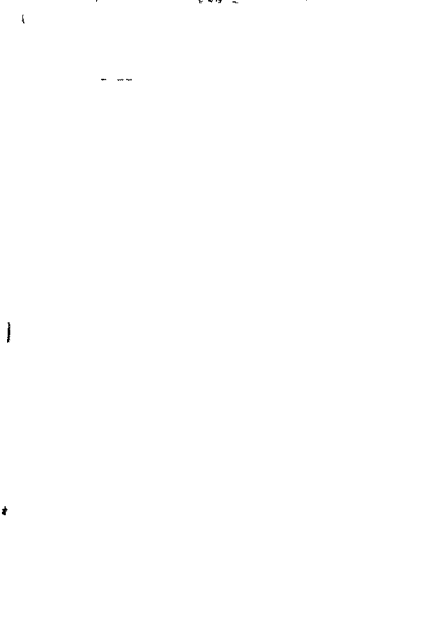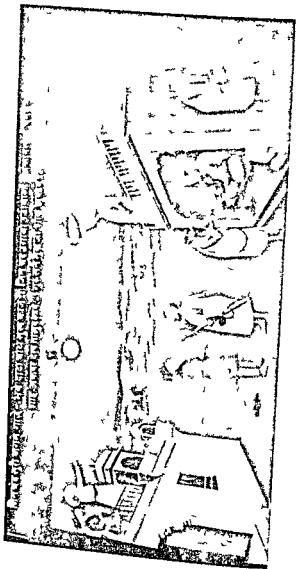
चित्र न

चित्र न. २६ मे

दादा गुरुदेव का एक शिष्य नगर में गोचरी (भिक्षार्थ) जाता है काजी रास्ते में मिलता है और पूछता है कि महाराज आज क्या तिथि है । उस दिन थी तो अमावास्य परन्तु शिष्य के मुँह से भूल से पूनम निकल जाती है । याद आते ही गुरुदेव के पास आ क्षमायाचना करता है । गुरुदेव उसे आश्वासन देते हैं। इधर काजी नगर भर मे शिष्य के निस्मृत वचन का असत्य प्रचार कर देता है । तब गुरुदेव अेक भक्त श्रावक के द्वारा रजत का थाल मगवा कर उसे अभिमन्त्रित कर आकाश मे चढा देते हैं। अकबर बादशाह काजी वगैरे महल के ऊपर चढकर चन्द्रमा को देख विस्मित होते हैं। एव परीक्षणार्थ चारों तरफ घोडे ऊँट आदि दौडाते है । वह चन्द्रमा चारो दिशाओं मे बारह बारह कोस तक भूमण्डल को प्रकाशित करता है । (आज भी रशिया ने कृत्रिम चाँद आकाश मडल में यत्र बल से छोडा है । वह सारे विश्व का भ्रमण कर रहा है) इस चित्र मे आप को वही दीख रहा है ।

رساله منور البصر السالکین که نشان در حق
راهشان را رهبر و در نوبت و الفقر درین جوه

चित्र न. २७ मे

आपके समक्ष चतुर्थ दादा गुरुदेव की शासन प्रभावना का बादशाह अकबर प्रदत्त शाही फरमान है। फरमान लखनऊ के खरतरगच्छ भंडार में विद्यमान है। फरमान मे बताया गया है गुरुदेव की प्रभुभक्ति से प्रसन्न हो अकबर बादशाह अपने सारे मुल्क में जीवहिंसा का निषेध कराता है। वही फारसी फरमान शाही मुहर के साथ आपके समक्ष है। इसी प्रकार के और भी ५-६ फरमान भंडारों में विद्यमान है।
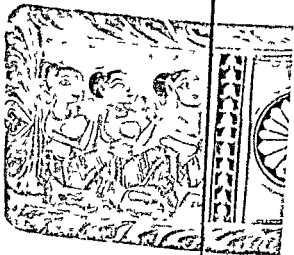
चित्र न २८ मे

आप देख रहे हैं प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी श्री गुणरत्नसूरी को स्थापनाचार्य के भेद एव महत्वा बताते हुए शका का निराम करते हुए दृष्टि गोचर हो रहे है यह चित्र करीब ६०० वर्ष की प्राचीन काष्ट पट्टिका के ऊपर जैसलमेर के प्राचीन भडार से लिया गया है ।

चित्र न. २९ मे

प्रथम दादा गुरु देव श्री जिनदत्त सूरीश्वरजी स्वशिष्य पंडित जिनरक्षित आदि को आगमों के गूढ रहस्यों का समजाते हुए इस चित्र मे दर्शित हो रहे हैं यह चित्र भी जैसलमेर की प्राचीन सचित्र काष्ट पट्टिका से लिया गया है ।

॥ श्री ॥

दो शब्द

परम पूज्य व्याख्यान वाचस्पति शासन प्रभावक मुनि प्रवर श्री १००८ श्री कांतिसागरजी महाराज साहब एवं न्यायतीर्थ साहित्यशास्त्री मुनिराज श्री दर्शनसागरजी महाराज का मद्रास श्री संघ के अत्याग्रह से साहुकार पेट में आप का चातुर्मास हुआ। आप श्री का आषाढ शुक्ला ३ को श्री संघ की अत्यन्त श्रद्धा भक्ति के साथ प्रवेश महोत्सव हुआ। पश्चात् आषाढ शुक्ला ११ को दादागुरुदेव श्री जिनदत्त सूरीश्वरजी की अभूत पूर्व जयन्ती मनाई गई। जिसके उपलक्ष्यमें शानदार भव्य वरघोडा, ओसवाल समाजकी वृद्धि के इतिहास पर जयन्ती नायक के जीवन चरित्र पर भाषण हुए दुपहर में दादा गुरु देव की शानदार पूजा, प्रभावना आंगी आदि हुई। महाराज श्री के सार्वजनीन प्रवचनों से प्रभावित जैन समाज ने चातुर्मास तक व्याख्यान की समाप्ति तक बाजार बन्द किये। साधारण भवन के विशाल हॉल भी सकीर्ण हो जाते थे इतनी विशाल जनता आप के व्याख्यानों का लाभ लेने आती थी। सब सुलभता से सुन सकें अतः ध्वनिविस्तारक यंत्र का भी प्रबंध किया गया था। आषाढ शुक्ला चतुर्दशी से चारमास तक प्रति दिन नव आयंबिल की नियमित तपश्चर्या श्री संघ में शुरु की गई। श्रावण महीने में तपोपदेश नवरंगी तप का आयोजन हुआ जिस में दो से नव उपवास वाले ३५० एवं पूर्णाहुति के उपलक्ष में १००० उपवास वाले थे। तपस्वी वरघोडे का ठाठ अभूत पूर्व था। जनता टीडीदल के समान

तपस्वायों के ग्गनाथ व वरघाडे म उमड पडी थी । इस साल तपागच्छ म दो सवच्छरीयी । परतु प्रतिदिन के आप के सचोट समन्वयादी सघठन के उपदेशों ने मद्रास नगर में वह काम कर दिखाया जो कि अखिल भारत में आप को कहीं भी ऐसा उदाहरण न मिलेगा अनुकरण फिर भी हो सकता है विधाता होना कठिन ही नहा परतु महान कठिन तम कार्य है जिस को इस साल मद्रास श्री सघ ने कर के सपूर्णजैन भारत के समक्ष एक अनुकरणीय प्रशस्त उपादेय उदाहरण प्रस्तुत किया वह कार्यथा श्वेताबर जैन मात्र की एक ही गुरुवार की सवत्सरी महापर्व का आराधन होना । बिना किसी भेद भाव के गुरुदेव के समक्ष सब अपनी अपनी विधि अनुसार क्रिया कर के सवच्छरी पर्व की आराधना की । समग्रजैन समाज के इस सगठित कार्य की प्रसन्नता में श्री दादावाडी में नवकारशी, स्वामीवच्छल भी हुए । दो वर्ष पूर्व आपने चादा चातुमास कर श्री भद्रावती तीर्थ का चतुर्विध सघ निकल्या श्री उपधान तपकी वहाँ पर आराधना करवाई उस समय आप के सदुपदेश से भद्रावती दादावाडी में दादा गुरुदेवों के जीवन के प्रभाविक चित्र भित्तियों पर चित्रित कराये गये । उन चित्रों सहित दादा गुरु देवों के चरिताश व स्तोत्रादि से युक्त एव जिनेश्वरों के कतिपय स्तवनादि सहित इस लघु ग्रन्थ को हमारे यहाँ के ज्ञान खाते के द्रव्य से छपवाते हुए हम ज्ञान भक्ति की आराधना में अपना यत् किंचित् सहयोग देते हैं ।

जैन सघ मद्रास

।। आमुख ।।

— * —

प्रिय पाठकों ! श्री दादा गुरदेवों की चित्रमयी जीवनी व स्तव भावनान्वियुक्त यह पुस्तक आप के हाथ में है । श्री जैन शासन में प्रकाशमान ज्योतिर्धर महान चमत्कार पूर्ण जीवनवाले जैन दर्शन प्ररुपित आठ प्रभावकों में से अनन्यतम प्रभावक आबाल गोपाल प्रसिद्ध श्री दादाजी महाराज नाम से विख्यात चार गुरुदेव हुये हैं। सवत् २०१२ की साल मे व्याख्यान वाचस्पति, शासन प्रभावक मुनि महाराज श्री १००८ श्री कान्तिसागरजी महाराज साहब तथा न्यायतीर्थ, साहित्य शास्त्री मुनिराज श्री दर्शन सागरजी महाराज हमारे अहोभाग्य से चॉदा (M P) नगर में चातुर्मास विराजे। आपके सार्वजनीन व्याख्यानों से जन व जैनेतरों मे स्वशासन की महती प्रसिद्धि हुई। चातुर्मास पश्चात् श्री भद्रावती तीर्थ का चॉदा से चतुर्विध सघ निकला व वहाँ पर उपधान महातप का आयोजन हुआ। आपका वहाँ पर करीब २ महीने विराजना हुआ। इस अवसर पर आपकी देख रेख मे भद्रावती तीर्थ की दादावाडी में चारों दादा गुरुदेवो के चित्रमय जीवन प्रस्तर भित्ति पर कुशल कलाकार के द्वारा उट्टकित कराये गये उन्ही चित्रों से यह लघु ग्रन्थ आपके कर कमलों को सुशोभित कर रहा है। अब सक्षेप मे चारो गुरदेवो का परिचय जान लेना भी आपको आवश्यक होगा।

प्रथम युग प्रधान श्री दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज विक्रम की बारहवीं शताब्दी में विद्यमान थे। आपने योगबल, तपोबल एवं संयम बल से ५२ वीर ६४ योगिनियाँ एवं नदी पाँच पीर सिद्ध किये किये थे। आप नवांगीवृत्तिकार श्रीमद् अभयदेवसूरीश्वरजी के पट्टधर समर्थ विद्वान् महाकवि श्रीमद् जिनवल्लभसूरीश्वरजी के पट्टाकाश में सूर्यसदृश प्रकाशमान थे। आपने धवलगा (गुजरात) को संवत् ११३२ की साल में जन्म से पावन किया था। नव वर्ष की लघुवय में ही संयम स्वीकार कर साधना पथ में अग्रसर होने लगे। संयम योग तप आदि साधना द्वारा वज्रस्तंभ में से प्राचीन ग्रन्थ को प्राप्त कर आपने जीवन में अनुपम शासन सेवाएँ की। चौहानों के प्रतापी महाराज अर्णाराज राठौड़ाधिपती श्री सिंहोजी आप श्री के अनन्य भक्त थे। आपने अपने जीवन काल में एक लाख तीस हजार भव्य प्राणियों को प्रतिबोध दे नये जैन बना, ५७ गोत्रों की स्थापना कर ओसवंश के साथ जैन शासन की वृद्धि की। आपने चर्चरी प्रकरण आदि जैसे गंभीरार्थ कई स्वतन्त्र ग्रन्थ व कई गहन विषय प्रतिपादक ग्रन्थों की टीका कर जैन साहित्य की सेवा की। आपका संवत् १२११ में आषाढ सुदि ११ को अजमेर में स्वर्गवास हुआ। आज भी वह भूमि अनेक चमत्कारों से व्याप्त है।

द्वितीय दादा गुरुदेव श्री १००८ श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के भालस्थल में नरमणि होने से आप मणिधारीजी

के नाम से प्रख्यात हुये ! आप प्रथम दादागुरुदेव के पट्टालंकार थे। आपने महतियाण जाति को जैन बनाकर एवं श्रीमाल जाति में अनेक मन्त्रों को बोध दे, जैन जनता की अभिवृद्धि की, आपने अपने नाम से विक्रमपुर (जैसलमेर भाटीये) को संवत् ११९७ भाद्रवा सुदि ८ के दिन परम पावनमय बनाया था। आप भी लघु वय में ही परमपावनी भागवती दिक्षा ले आत्मसाधना में तप संयम के द्वारा दत्तचित्त हो आगे बढते रहे। दिल्ली का शासक राना मदनपाल आप का अनन्य भक्त था। आत्म साधना में लीन होते हुये १२२३ भाद्रवावदि १४ को दिल्ली में आप दिवगामी हुये।

तीसरे श्री दादागुरुदेव श्री श्री १००८ श्री मज्जिन कुशल सूरीश्वरजी महाराज विक्रम की चौदहवी शताब्दि में हुए। चार राजाओं के प्रतिबोधक कलिकालकेवली विरदवाले श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के आप पट्टधर थे। कई अजैनों को आपने जैन धर्मी बनाये थे। कई देवी देवता आपकी सेवा करते थे। आपकी जन्मभूमि समियाणा (सिवाणा मारवाड) थी तो स्वर्ग भूमि सिन्ध के देराउर नामक ग्राम में चमत्कार पूर्ण विराजमान है। सोमवार पूनम अमावस को आपके नाम से कई भक्त एकाशन आदि करते हैं। ध्यान करनेवालों को आपके दर्शन आज भी हाजरा हजूर है। चिन्ताहरण करने के लिये चिन्तामणि के समान है। फाल्गुनी अमावस्या के दिन आपकी स्वर्गजयती सर्वत्र मनाई जाती है।

चाथे श्रीदादागुरुदेव श्री श्री १००८ श्रीमज्जिन चन्द्रसूरी-श्वरजी महाराज सतरहवीं शताब्दी के महान् शासन प्रभावक थे। आप श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी महाराज के पट्टधर थे। आपने मुगल सम्राट अकबर को अहिंसा के रंग से रंग दिया था। सम्राट ने अपनी प्रसन्नता के लिये अपनी भक्ति से जीवदया के बड़े फरमान अपने शासित प्रदेशों में प्रचारित किये थे। एवं आपको 'युग प्रधान' पद से सम्मानित किये थे। अकबर के अंतिम जीवन में जो दया धर्म की झलक इतिहास में प्रसिद्ध है वह आपही के त्याग तपोबल का प्रभाव था। सिरोही की लूट से लाई हुई कई धातुमय जिन प्रतिमाओं का मुगलों द्वारा नष्ट होने से आपने बचाई थी, और जैन संघ के आधीन करवाई थी। जो कि आज भी बीकानेर श्री चिंतामणिजी के मन्दिर में भण्डार में सुरक्षित है। उपद्रव निवारणार्थ कभी कभी पूजी जाती है। सम्राट जहांगीर द्वारा साधु विहार प्रतिबंध की आज्ञा को अपने प्रभावद्वारा आपने रद्द करवाकर जैन संघ की महान् सेवा की थी। आपने धर्मसागर नाम के महाउपद्रवी साधु का वाद में दिग्गज विद्वानों की सभा में पाटण आदि स्थानों में पराजित करके जैन शासन की रक्षा की वीर शिरोमणि जैन रत्न परमार्हत् मन्त्रीश्वर कर्मचन्दजी बच्छावत जैसे उदार आपके अनन्य भक्त थे। अहमदाबाद के पोरवाड श्रीशिवाजी सोमजी नाम के भक्त आपकी दया से धनपति कुबेर के समान हो गये थे। आप की जन्म भूमि खेतासर (मारवाड) थी तो स्वर्ग भूमि बिलाड़ा प्रसिद्ध है।

गुजरात में पालन पुर पाटन अहमदाबाद, सूरत, खभात, जामनगर, बम्बई आदि नगरों में दादादूज के दिन (जो कि आपका स्वर्गदिन है आसाज वदिदूज, गुजराती भाद्रवा वदि दूज) मेला भरा जाता है। चारों से कई स्थानों में आपकी जयन्तियाँ मनाई जाती हैं।

इन चारों गुरुदेवों के जीवन से पाठक भी पावनमय जीवन यापन करना सीखें एव शासन सेवा के लिये जीवन के अमूल्य क्षणों का अर्पन कर साधक साध्य की प्राप्ति करें। यही अभिलाषा करता हुआ गुरुदेव के गुणी जीवन के गुणगान मे दो शब्द लिखने के सौभाग्य को सराहता हुआ विराम लेता हूँ।
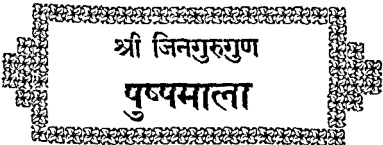
दादा गुरुदेव का चरणकिंकर
चैन करण गोलेच्छा
चादा एम पि

— प्रकाशकीय —

यह ज्ञान मन्दिर गुरुदेव के सहयोग व हमारे प्रयत्न स्थापित हुआ है। इस पूर्व भी कई छोटी मोटी पुस्तकें यहाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इस चारो दादा गुरुदेवों के चित्रम् शरमर से व्याप्त भक्ति भाव से आप्लावित जिनदेव व गुरुदेवों के भक्ति भरित गुणों से ओतप्रोत इस "श्री जिन गुरु गुण सचित्र पुष्पमाला को प्रकाशित करते हुये हम प्रसन्नता को प्रकट करते हुये इस ग्रन्थो के चित्रों के प्रेरक भद्रावती तीर्थ के प्रेसीडेन्ट चादा के माननीय सेठ श्रीमान् चैन करणजी गोलेच्छा का एवं इस ग्रन्थ को सपादन करने के हेतु गुरुदेव का हम आभार मानते हैं एव द्रव्य सहायक श्री सघ धन्यवाद के पात्र हैं।

मत्री पारसमल खजान्ची कान्ति दर्शन ज्ञान मंदिर
नागोर (राजस्थान)

श्री जिनगुरुगुण

पुष्पमाला

श्लोक

तुभ्यं नमः स्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।
तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणाय ॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य-
कारुण्य पुण्य वसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय
दुःखाङ्कुरोद्दलन -- तत्परतां विधेहि ॥

। दुहा ।

शस्त्र नहीं मालानहीं, नारी भी नहीं साथ ।
वीतराग जिन नाथ को, याते जोड़ू हाथ ॥ १ ॥

जिन प्रतिमा जिन सारखी, आगम-वचन प्रमाण ।
पूजू प्रणमू प्रेम से, पाउ कोडि कल्याण ॥ २ ॥

प्रभु-दर्शन सुख सम्पदा, प्रभु दर्शन नवनिद्ध ।
प्रभु दर्शन थी पामिये, सकल पदारथ सिद्ध ॥ ३ ॥

सुखसागर भगवान् जय, जयहरि-पूज्य जिनेश ।
जय फणीन्द्र-वर-वन्द्य ! तू, जय दे मुझे महेश ॥ ४ ॥

(१)

ॐ कार बिन्दु सयुक्त, नित्य ध्यायन्ति योगिन ।
कामद मोक्षद चैव, ॐ काराय नमो नम ॥

(२)

दर्शन देवदेवस्य, दर्शन पाप—नाशन ।
दर्शन स्वर्गसोपान, दर्शन मोक्ष—साधन ॥

(३)

सरस शात सुधारस सागर, शुचितर गुणरत्नमहाकर।
भविक पकज बोध दिवाकर, प्रतिदिन प्रणमामि जिनेश्वर ॥

(४)

पूर्णानन्दमय महोदयमय, कैवल्य चिद्दृग्मय ।
रूपातीतमय स्वरूपरमण, स्वाभाविक-श्रीभ्रयम् ॥
ज्ञानोद्योतमय कृपारसमय, स्याद्वादविद्यालय ।
श्रीसिद्धाचल-तीर्थराज मनिश, वदेहमादीश्वरम् ॥

(५)

नेत्रानदकरी भवोदधितरी, श्रेयस्तरोर्मंजरी ।
श्रीमद्-धर्म-महानरेन्द्र-नगरी, व्यापल्लताधूमरी ॥
हर्षोत्कर्षशुभ—प्रभावलहरी, रागद्विषाजित्वरी ।
मूर्ति श्रीजिनपुगवस्य भवतु श्रेयस्करी देहिनाम् ॥

(६)

अर्हन्ता भगवत इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिता-
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्याउपाध्यायका ॥
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका ।
पचैते परमेष्ठिन प्रतिदिन, कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

(७)

श्री ज्ञानायक, तु धणी महा मोटा महाराज ।
मोटे पुन्ये पामीयो, तुम दरसन मैं आज ॥

(८)

आज मनोरथ सब फले, प्रगटे पुण्य कल्लोल ।
पाप करम दूरे टल्या, नाठा दुःख दंदोल ॥

(९)

प्रभु दरसन सुखसम्पदा, प्रभु दरसन नवनिधि ।
प्रभु दरसनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध ॥

(१०)

भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दान ।
भावे भावना भावीए, भावे केवल ज्ञान ॥

(११)

जीवडा ! जिनवर पूजीए, पूजा ना फल होय ।
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥

(१२)

जगमें तीरथ दोय बडा, शत्रुंजय गिरनार।
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेमकुमार॥

(१३)

फूला केरा बाग म, बैठा श्री जिनराज।
जिम तारामा चन्द्रमा, तिम माहे महाराज॥

(१४)

बाडी चम्पा मोगरो, सावन कुपलिया।
याम जिनेश्वर पूजिये, पांचों अंगुलिया॥

(१५)

प्रभु नाम की औषधी, खरे मनसे खाय।
राग शोक व्याप नहा, महादोष मिट जाय॥

(१६)

प्रभुका नाम जमाल है, या जगमें नहिं मोल।
नफा बहुत टोटा नहीं, झट पट मुख से बोल॥

(१७)

जाभा व्हाली बीजली, धरती व्हारो मेह।
राजुल व्हाला नेमजी, अपणा व्हारो देह॥

(१८)

अरिहंत सिद्ध आचारज भला, उपाध्याय महाराज।
साधु सेवो भावसे, पाँचु ही मंगलिक काज॥

* ॐ *

॥ श्री जिनमन्दिर दर्शन विधि ॥

श्री जिन मंदिर में जाने वाले भाविक शुद्ध वस्त्र पहिन
र साथ में चावल, बादाम, मिश्री, लड्डू, फल वगैरह नैवेद्य
कर "निसीही" कहकर मंदिर के पास पहुचना चाहिये, वहा
हुच कर दूसरी "निसीही" कहकर मंदिर में प्रवेश करे, फिर
सरी "निसीहि" कहकर श्री वीतराग भगवान के दर्शन होते
अस्कर वन्दन करे। फिर स्तुति करे।

॥ प्रभु वन्दना ॥

नाथ निरंजन भव भय भंजन, तीन भुवन के हे स्वामि।
वीतराग सुख सागर हे—भगवान महोदय गुणधामी॥

अजर अमर पूरण परमातम, आतम सत्ता विसरामी।
करता हू मैं वन्दन तेरे, चरण कमल में सिर नामी॥

सुर नर नायक पूज्य प्रभो तू, पुरुषोत्तम शिव शंकर है।
बोधि विधाता बुद्ध तुही, परमातम तू अभयङ्कर है॥

वाणि अगोचर वर्तन तेरा, तूही है जग में नामी।
करता हू मै वन्दन तेरे, चरण कमल में सिर नामी॥

तेरे ही आदर्शों में है, मोहक मञ्जुल भाव भरे।
अबतो एसी करदो बस ज्यों, मेरा भी भव रोग टरे॥
'श्री हरिपूज्य कवीन्द्र' मुदित, हो कर तेरा अनुगामी।
करता हूं मैं बन्दन तेरे, चरण कमल में सिर नामी॥

इत्यादि ओर भी स्तुतिया कह सकते हैं। ध्यान र की बात है कि स्तुति बोलते समय पुरुष प्रभु की दाहिनी त खडा रहे और स्त्री बाई तरफ खडी रहे। स्तुति करने के मूल गभारे की दाहिनी तरफ से तीन प्रदक्षिणा लगावें। बाद पाटे पर (अक्षत) चावल से तीन छोटी ढिगलियें, ज्ञान, द चारित्र कहते हुए करें। नींचे के भाग में एक साथिया क उपर के आकार में चन्द्रमा की तरह सिद्ध शिला मडाण लेवे, जैसे—नीचे दीये गये हैं।

॥ साथिया के दूहे ॥

दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधन थी सार।
सिद्ध शिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार॥

अग्नपूजा करता थका, मफल करू अवतार ।
फल मागु प्रभु आगले, तार तार मुझ तार ॥
ससारिक फल मागीने, रगडियो बहु ससार ।
अष्ट कर्म निवारवा, माँगू मोक्ष फल सार ॥
चौहु गति भ्रमण ससारमा, जन्म मरण जजाल ।
पचम गति विण जीवने, सुख नहीं त्रिहू काल ॥

फिर तीन खमासमण हाथ जोडके खडे होते हुए और
कैते हुए इस प्रकार करे —

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणीज्जाए निसीहिआए,
त्थएण वन्दामि ।

फिर दावा गोडा ऊचा करके नीचे का पाठ कहे —
इच्छा कारेण सदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन करूजी,
इच्छ" ।

(चैत्यवदन)

सिद्ध बुद्ध चौवीस जिन, ऋषभ अजित भगवान ।
सभव अभिनन्दन-सुमति, पद्मसुपास-महान ॥ १ ॥
चन्द्रप्रभ - सुविधि - शीतल, श्री श्रेयास - जिनेश ।
वासुपूज्य प्रभु विमल जिन, अनत धर्म विशेष ॥ २ ॥

शान्ति-कुंथु अर मल्ली मिथु, मुनिसुव्रत नमि-नेम ।
पार्श्व-वीर "हरि" पूज्यए, नित नन्दु धर प्रेम ॥ ३ ॥

(इच्छानुसार आर भी नये २ चैत्यवन्दन कह सकते हैं)

बाद में जंकिंचि सूत्र कहे

॥ जं किंचि सूत्र ॥

जं किंचि नामतित्थ, सग्गे पायालि माणुसे लोए जाइ जिण बिंबाई ताइ सव्वाइ वंदामि ।

॥ नमोत्थुणं सूत्र ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं । अभयदयाणं चक्खु दयाणं मग्गदयाणं सरण दयाणं बोहिदयाणं । धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंत-चक्कवट्टीणं । अप्पडिहयवरनाण दंसण धराणं विअट्ट छउ माणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअमणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं । नमो जिणाणं जिअभयाणं । जे अ अइया सिद्धा,

...अ संपइ अ अणागए काले। सव्वे अ वद्धमाणा, मण्णे ... वंदामि।

॥ जावंति चेइआइं सूत्र ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ सव्वाइं ..., इह संतो तत्थ संताइं ॥

॥ जावंत केवि साहू सूत्र ॥

जावंत केवि साहू। भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं ... पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं।

॥ परमेष्ठिनमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः।

॥ उवसग्गहरं स्तोत्र ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥

विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह रोगमारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होई।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥ ३ ॥

तुह सम्मते ल्द्धे चितामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेण, जीवा अयरामर ठाण

इह सथुआ महायस, भत्तिभरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द

(प्रभु के सामने चैत्यवन्दन करते समय "उवस
के स्थान पर कोई अन्य स्तवन भी गा सकते हैं ।)

॥ प्रभुप्रार्थना ॥

(कव्वाली)

अवसर प्रभु हो ऐसा, जब प्राण तन से निकले ॥ टे

नेमिनाथ पूर्ण ज्ञानी, दुनिया छोटी दिवानी ।
मुझको भी करना ध्यानी, जब प्राण तनसे निकले ॥

गिरनार गिरि के ऊपर, सहसाम्र है जहाँपर ।
ध्यान धर मै वहाँपर जब प्राण तनसे निकले ॥

पिंडस्थ पदस्थ करूँ, रूपस्थ का मैं जो लूँ ।
रूपातीत पूर्ण पाऊँ, जब प्राण तनसे निकले ॥

आसन पदम लगा हो, मद मोह दूर भगा हो ।
घट ज्ञान भी जगा हो, जब प्राण तन से निकले ॥

तुम चरण सन्मुख मैं, आलोचना करूँ मैं ।
तुम नाम का रटू मैं, जब प्राण तनसे निकले ॥

करता "हरि" विनयमें, अनन्य भावना से ।
मीरारना हृत्य से, जब प्राण तनमें निकले ॥ ६ ॥

विधि—बाद में दोनो हाथ जोड़कर मस्तक से लगाकर राय पढ़े।

॥ जय वीयराय सूत्र ॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ मम तुह पभावओ भयव !
भवनिव्वेओ मगाणुसारिया इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥
लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरण च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
विधि—खड़े हो कर हाथ जोड के नीचे का पाठ कहे।

॥ अरिहंतचेइयाण सूत्र ॥

अरिहंतचेइयाण करेमि काउस्सग्ग । वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ।

॥ अन्नत्थ ऊससिएण सूत्र ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जंभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं ‍चालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारे काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

विधि—यहां मन में एक नवकार का (स्मरण) क करना । बाद में काउस्सग्ग पार के 'नमो अरिहंताणं' 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य' कहके । बाद करे ।

॥ स्तुति ॥

अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीरजिन पावापुरे ।
वासुपूज्य चम्पानगरी सिद्धा, नेम रेवा गिरिवरे ॥

समेतशिखरे बीस जिनवर, मोक्ष पहुंता मुनिवरू ।
चौवीस जिनवर नित्य वंदु, सयल संघ सुखकरू ॥

विधि—बाद खमासमण देके "नमुकार सहि" आ यथाशक्ति पचक्खाण करे ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खामि, चउ आहार असणं पाणं, खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं, सहसा वोसिरामि ।

॥ इति दर्शन विधि ॥

श्री आदिजिन स्तवन (१)

(तर्ज—ल्हेरदार चिट्ठा)

मरुदेवी का नन्दन लागे प्यारा हो,
जय कारी जयन्त जिनवर की।
कर दर्शन नित पाप ताप मटागे हो,
जयकारी जय जय जिनवर की टेर ॥

युगला धर्म निवारक आदि जिनन्दा हो ज०
तीन लोक में तारक विच जिम चन्दा हो ज० जय जय० ॥ १ ॥

पथ निसला मिथ्यातम दूर हटाया हो ज०
स्याद्वाद नयवाद प्रभु प्रगटाया हो ज० जय जय० ॥ २ ॥

संघ चतुर्विध थापन कर सुखकारी हो ज०
भविजन को दे बोध मुक्ति अधिकारी हो ज० जय जय० ॥ ३ ॥

मातृप्रेम आदर्श प्रभुने दिखाया हो ज०
जन्ममरण कर दूर मोक्ष पहुचाया हो ज० जय जय० ॥ ० ॥

जो अजरामर पद दिले हो ज०
सो जगजश ...जे हो ज० जय

सुमतिजिन स्तवन (२)

(तर्ज—गझल)

सुमतिजिन सुमति पथ दीजे, शीघ्र ही मोक्ष जाने को टेर

भ्रमत ससार अटवी में, वहु दु ख पागया जिनवर ।
दयालु हे दया करिये, भवाटवी दूर करने को ॥ सुमति० ॥ १ ॥

भवोदधि बीच धारा म, प्रभो हे डुबती नेया ।
कृपालु हे कृपा करिये, भवोदधि से तिराने को ॥ सुमति० ॥ २ ॥

कष्ट के बान्ध के मुझको, कर्मरिपुने फँसाया है ।
कर क्या यत्न म स्वामी, कर्मदल दूर करने को ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

हृदय से अर्ज करता हूँ, याद फिर क्यों नहीं जाती ।
परम दातार पद्मधारी, मुजे दोनाथ शिवपुर को ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

करो यह प्रार्थना स्वीकृत, दास पर महरबानी कर ।
प्रभो हरिपूज्य पदसेवा, सदा दे 'कातिसागर'को ॥ सुमति० ॥ ५ ॥

वासुपूज्यजिन स्तवन (३)

(तर्ज—जिनराज नाम तेरा राखु हमारे घट में)

जिनराज ताज तेरे, शरणे मै आज आया ॥ टेर ॥
प्रभु वासुपूज्य स्वामी, तुम विश्व में हो नामी ।
तीनों भुवन के स्वामी शरणे मै आज आया ॥ १ ॥

चम्पापुरी है सुन्दर, जिनराज का है मन्दिर।
रहता चरण के अन्दर, शरणे मैं आज आया ॥ २ ॥
दरबार में मै आया, लख मूर्ति को लुभाया।
हर्षाश्रु को बहाया, शरणे मे आज आया ॥ ३ ॥
रिपु पापपुञ्ज टारो, जिनराज तारो तारो।
मुनिवर अब निहारो, शरणे मैं आज आया ॥ ४ ॥
तुम हो गुणों के आगर, सब पाप को भगाकर।
"हरिपूज्य कान्तिसागर", शरणे मैं आज आया ॥ ५ ॥

शान्तिजिन स्तवन (४)

(तर्ज---गुरुदेव मेरा तुम ही करोगे निस्तारा)
शान्तिनाथ तुम्हारा, दर्शन है मुझ प्यारा ॥ टेर ॥
विश्वसेन अचिरा के नन्दन, मिथ्यामत को करत निकन्दन।
त्रटक २ हो अघके बन्धन, ततृक्षिण तोडके टारा ॥शा० ॥ १ ॥
मनोहर मूर्ति जिनवर तेरी, सिद्धगति को तुमने हेरी।
नष्ट करी भव भव की फेरी, अमरापुरको सिधारा ॥शा० ॥ २ ॥
भ्रमन २ मैं बहु दुख पायो, काल अनन्त का व्यर्थ गमायो।
सम्यक्त्वरत्न कर पे नहीं आयो, कर्मोंने करदियाकारा ॥शा० ॥३॥
भवदधि बिच थरथर धूजैया, करदो पार हमारी नैया।
अशरण शरण [illegible]

गुणनिष्पन्न तुम नाम हे त्राता, श्रीहरिपूज्य है शान्तिदाता ।
'कान्तिसागर' तुमके गुणगाता, निनय शरण तुम्हारा ॥शा० ॥५॥

श्री पार्श्वप्रभु स्तवन (५)

(तर्ज—महावीर तुम्हारी मोहन मूर्ति देखी मन ललचाय)
प्रभु पास तुम्हारा मोहन मुद्रा देखी मन ललचाय ॥ टेर ॥

वामादेवी के नन्दा, हैं श्री प्रभुपास जिनन्दा ।
जिम तारा निच चन्दा, न्पि दिन दिन तेज सवाय ।
प्रभु पास० ॥ १ ॥

वाणारसी अवतरके, कमठ को निर्मद करके ।
सम्मेतशिखर आकरके, पहुचे मुक्तिपुरी में जाय ।
प्रभु पास० ॥ २ ॥

पारसमणि सगे लोहा, सुवरन बन जावे देहा ।
पारस प्रभु सग करे हा, वे सच्चे पारस बन जाय ॥
प्रभु पास० ॥ ३ ॥

मझधार है नैया मेरी, अब शरण ग्रही में तेरी ।
कर पार न कर प्रभु देरी, भवसागर से ज्यों लघ जाय ?
प्रभु पास० ॥ ४ ॥

खरतर गणनायक भारी, 'हरिपूज्य' प्रभु जयकारी ।
है नाथ जाउ बलिहारि, तेरा 'कान्तिसागर' गुण गाय ।
प्रभु पास तुम्हारी मोहन मुद्रा देखी मन ललचाय ॥ ५ ॥

श्री महावीर जिन स्तवनम् (६)

(तर्ज—पर उपगारी दादा तुम का लाग्यो प्रणाम)

वीर बनानेवाले तुमको क्रोडों प्रणाम ॥ टेर ॥

क्षत्रियकुण्ड में जन्म तुम्हारा, त्रिशलादेवी नन्दनप्यारा ।
वर्द्धमान शुभ नाम, तुमको क्रोडों प्रणाम ॥ वीर० ॥ १ ॥

दीक्षा ले प्रभु कर्म खपाये, अनुपम केवलज्ञान को पाये ।
दे मुझ को भी स्वाम, तुमको क्रोडों प्रणाम ॥ वीर० ॥ २ ॥

स्वामी शासन वीर बनादो, राग द्वेष को दूर हटा दो ।
गाउ तुम गुण ग्राम, तुम को क्रोडों प्रणाम ॥ वीर० ॥ ३ ॥

तीर्थधाम पावापुर सुन्दर, राजत है जहां वर जलमन्दिर ।
प्रभु दर्शन शिवधाम, तुम को क्रोडों प्रणाम ॥ वीर० ॥ ४ ॥

तार तार प्रभु, हे सुखसागर । श्री हरि पूज्य शरण शुभ देकर
"कान्तिसागर" अभिरामतुम कोक्रोडों प्रणाम ॥ वीर० ॥ ५ ॥

प्रभु की विनन्ति (७)

(तर्ज—छोटीमोटी सहियाँ रे जालीका मोरा गूथना)

प्रभुवर ! महर करो, मुक्ति दरवाजा खोलना ॥ टेर ॥

स्वामी तेरे शरण में आया २ ।
मूरति देख ... मुख से जय जल्दी बोलना ॥ १

मैंने चहु गति चक्र खाया, २ ' रागादि बन्धन याग ।
उसका अब जल्दी खोलना ॥ २ ॥

कर्म अनादि सग लगे हैं २ माहादिक जजाल ।
जल्दी से उनका ताडना ॥ ३ ॥

अपने सुख मे सुखिये स्वामी, २ ना मेरा बरदान ।
मेरी विनती का साचना ॥ ४ ॥

' हरि पूज्येश्वर' "कान्तिसागर" २ द्वार खडा हैं आय ।
मेरी भक्ति का तारना ॥ ५ ॥

स्तवन (८)

(तर्ज—छोटे से बलमा मारे आगना म गिल्ली खेले)

विनती करो स्वीकार, जिनवर मुक्ति दिखाना ।
अब करु करजोड, विनय वचन फहरा लो ॥ टेर ॥

मुक्ति नगर के बीच, प्रभु मुझ को पहुचादो ।
भक्ति करू दिनरात, आफत दूर हटादो ॥ विनती० ॥ १ ॥

मुक्ति मिलन की आश, पूर्ण मेरी करदो ।
अविचल पद की डेय, निर्भय मुझ को कर दो ॥ विनती० ॥ २ ॥

मुक्ति वधुका हो सग, और न इच्छा मुझ का ।
कर्म बधन दो तोड, पाउ मैं शिवपुर का ॥ विनती० ॥ ३ ॥

पाप विमर्जन कर, अजर अमर पन्द देदो।
प्राप्त कर सुखठाम, मुक्ति रमण वर देदो ॥ विनती० ॥ ४ ॥
हरिपूज्येश्वर आप, सकट मेरा हर दो।
कान्तिसागर की है अर्ज, इतना काम तो करदो
॥ विनती० ॥ ५ ॥

स्तवन (९)

(तर्ज—अपार मेरे प्यारे महिमा गुरु की अपार)
आया तुम्हारे दरबार दरबार मेरे जिनवर
आया तुम्हारे दरबार ॥ टेर ॥
जिनवर तेरा शरण लिया है, कर दर्शन परसन्न भया है।
पावन तुम दीदार, दीदार मेरे जिनवर ॥ आयो ॥ १ ॥
कर पूर्ण आशा प्रभु मेरी, शिवकमला दो मत करो देरी।
शीघ्र ही अर्ज स्वीकार, स्वीकार मेरे जिनवर ॥ आयो० ॥ २ ॥
वीर बना दो डर को भगा दो, परस्पर में प्रेम बढा दो।
करें हम धर्म प्रचार, प्रचार मेरे जिनवर ॥ आयो० ॥ ३ ॥
शान्ति का साम्राज्य फैलावे, विश्व विजयी जैन धर्म बनावें।
दो प्रभु शक्ति अपार, अपार मेरे जिनवर ॥ आयो० ॥ ४ ॥
चरणकमल में शीष नमाकर, हरि पूज्येश्वर कान्तिसागर।
करदो बेडा पार, पार मेरे जिनवर ॥ आया० ॥ ५ ॥

स्तवन (१०)

(तर्ज—चाहे तारा या न तारा)

चाहे तारो या न तारो, शरणा मै ले चुका हूँ ॥ टेर ॥

प्रभुवर तुम्हारी मूर्ति, हृदये बसी हुई है ।
हटाइ नाहीं हटती, स्वीकार कर चुका हूँ ॥चाहे०॥१॥

नहीं भूख प्यास मुझको, नहीं नाद चैन मनको ।
रटता हूँ नाम निशदिन, दिल तो मैं दे चुका हूँ ॥चाहे॥२॥

दर्शन बिना प्रभुजी, है प्राण छटपटाते ।
दो दर्श शीघ्र हमको, पुकार करचुका हूँ ॥ चाहे० ॥ ३ ॥

हृदय में स्थान देकर, रखना मुझे प्रभुजी ।
मत भूलजाना मुझको, तेरा मै होचकाहूँ ॥ चाहे० ॥ ४ ॥

'हरिपूज्य कान्तिसागर' मन्दिर तुम्हारे आये ।
चाहे मानो या न मानो, कहना था कह चुकाहूँ ॥चाहे०॥५॥

सामान्य जिन स्तवनम् (११)

(तर्ज—जुल्म हाय जासीसा, गजब हाय जासीसा)

आयोसा आयोसा मनडा उम्हायो मा,
प्रभु थारे मन्दिर चालो हूँ आयोसा ॥ टेर ॥ १ ॥

मोहन मूर्ति थाँरी देखी, हीवडा हर्ष हिलोरा खावेसा ।
जन्मजन्ममें थारो है शरणा, मोक्षरोरास्तो जल्दी बतावोसा ॥ २ ॥

ऩ्दगा नन्दन मोहे, नमि, कसि ममिरो मार्ग दिखायामा ।
ऋ्ला पारवों नचायो, अचिरादेवीरो सुन सुखकारीमा ॥३॥
ादेवीरो लाडलो रे, अधनिच राजुल को ठिटकाइमा ।
ानन्दन राग छुडायो अलनलनी अग्निरे माहींसा ॥४॥
ा त्रिशला मालाग जायो, दया करी गोशाले बचायोसा ।
ऋ्पा ब्राह्मण उपर थे, अन्तर देकर दु:ख गमायोसा ॥५॥
ोर हरिपुत्र प्रमादे प्रभुवर थारा हूँ गुण गायोसा ।
ारणम् कान्तिसागरको, मुक्तिमहल में अब पहुचायोसा ॥६॥

वीर जिन स्तवनम् (१२)

(तर्ज—नैटा पार लगाना गुरुजी भूल न जाना)

हम का वीर बनाना, प्रभु मनमन्दिर आना ।
कुसुम सुवास फैलाना, हमको वीर बनाना ॥ टेर ॥

राग द्वेष को दूर करें हम, वीर बनी सब धीर बनें हम ।
प्रेमका पाठ पढाना ॥ १ ॥ हमको० ॥

मनपथ वीर हमें दिखलाकर, मन हृदय पवित्र बनाकर ।
अन्तर ज्योति जगाना ॥ २ ॥ हमको० ।

हम सब प्यारे वीर दुलारे, तीन भुवन के तुम रखवारे ।
पाप को दूर हटाना ॥ ३ ॥ हमको० ॥

चलकर तुम प्रभु द्वारे आये, कर दर्शन अति हर्ष को पा
जिनवर गले लगाना ॥ ४ ॥ हमको॰
सूरीश्वर हरिपूज्य हमारे, कान्तिसागर है शरण तुम्हा
मुक्तिनगर पहुचाना ॥ ५ ॥ हमको॰

वीर प्रार्थना (१३)

(तर्ज—किसे देख दिल तू हुआ है दिवाना)

सुना वीर सुना वीर ये दशा हमारी ।
कर लेना दिलको मजबूत भारी ॥ टेर ॥

अहिंसा के ठेके का लिये हुये हैं ।
हैं हिंसा मै दिनचर्या यें हमारी ॥ १ ॥

कहा वीर पुत्र कहलाने के काबिल ।
झगडे मचाने में है वीर भारी ॥ २ ॥

साधु हुये है दीक्षा का लेकर ।
बढाने को द्वेष साधुता है हमारी ॥ ३ ॥

गप्पे लडाने में बातें बनाने म ।
नवयुवकों का हे जोश बना खूब भारी ॥४॥

बने अधर्मी अशिक्षा का लेकर ।
नहीं वीर वचनो मे श्रद्धा हमारी ॥ ५ ॥

बुज़दिली पे पड्दा नहीं है हमारे।
स्त्री जाती प पड़ा है ये भारी ॥ ६ ॥

सूरिश हरिपूज्य गुरु हमारे।
देते हैं सद्‌बोध गुर गुण ज्ञान भारी ॥७॥

"कान्ति" के जीवन में शान्ति देना दा।
यही वीर विनती है तुमसे हमारी ॥ ८ ॥

समाप्त

श्री दादा स्तवनावली

संक्षिप्त परिचय

श्री नवकार मत्र

णमो अरिहंताण। णमो सिद्धाण। णमो आयरियाण। णमो उवज्झायाण। णमो लोए सव्वसाहूण।

एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मंगल ॥ १ ॥

गुरुवंदन

॥ खमासमण (प्रणिपात) सूत्र ॥

इच्छामि क्षमासमणो ! वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थेण वंदामि।

विधि—तीन बार क्षमासमण करके सुखसाता पूछनी चाहिये।

॥ सुखपृच्छापाठ ॥

इच्छकार भगवन् ! सुहराई सुहदेवसि सुख-तपशरीर-निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहते होजी स्वामिन् साता है ?

(आहारपानी का लाभ दीजियेगा)

विधि—कुशल प्रश्न के बाद दोनों घुटनों को जमीन पर टेककर सिर झुकाकर दाहिना हाथ जमीनपर या चरवले पर रखकर बाये हाथ में मुख के आगे "मुहपति" लेकर "अब्भुट्ठियो का पाठ" बोले।

॥ अब्भुट्ठियो (गुरुखामणा) सूत्र ॥

इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्त देवसिय (राइय) खामेउँ । इच्छं खामेमि देवसिय (राइय) जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अन्तरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झविणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

— * * —

॥ अथ प्रतिष्ठा ॥

सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपाभिर्वरिष्ठान् ।
शमदमयमतुष्टाश्चारचारित्रनिष्ठान् ॥
निखिलजगतिपीठे दर्शितात्मप्रभावान् ।
मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशलसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥
ॐ ह्रां श्रीं श्री जिनकुशलसूरे अत्र तिष्ठ ठ ठ ठ स्वाहा ॥

॥ इति प्रतिष्ठापन ॥

॥ अथ सन्निधीकरण ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरो अत्र मम सन्निहिता भव वषट् ॥

॥ इति सन्निधीकरणम् ॥

अथ लघु अष्टप्रकारी पूजा

(१) अथ जलपूजा ॥

सुरनदीजलनिर्मलधारया ।
प्रबल दुष्कृतदाघनिवारया ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यो जल यजामहे स्वाहा ॥

(२) अथ चन्दनपूजा ॥

मलयचदनकेसरवारिणा ।
निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यश्चदन यजामहे स्वाहा ॥

(३) अथ पुष्पपूजा ॥

कमलकेतकिचपकपुष्पकै ।
परिमलाहृतषट्पदवृन्दकै ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायक ।
कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्य पुष्प यजामहे स्वाहा ॥

(४) अथ अक्षतपूजा ॥

सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैं ।
प्रवरमौक्तिकपुञ्जसमुज्ज्वलैं ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

(५) अथ नैवेद्यपूजा ॥

बहुविधैश्चरुभिवरशर्करैः ।
प्रवरमोदकपुञ्जसुमानिकैः ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

(६) अथ दीपपूजा ॥

अतिसुदीप्तमयैः सकलदीपकैः
विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकम-
लेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ॥

(७) अथ धूपपूजा ॥

अगरचंदनधूपदशाङ्गकै ।
प्रसरिताखिलदिक्षु सुधूम्रकै ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकम-
लेभ्यो धूपं यजामहे स्वाहा ॥

(८) अथ फलपूजा ॥

पनसमोचसदाफलकर्कटै ।
सुसुगन्दैः किल श्रीफलचिर्भटैः ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकम-
लेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥

जलसुगन्धप्रसूनसुतन्दुलैश्चरुप्रदीपक-
धूपफलादिभिः । सकलमङ्गलवाञ्छित

दायक कुशलसूरिगुरोश्चरण यजे ॥ ? ॥

ॐ ह्रां श्रां श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकम-
लेभ्यो अर्घ्यं यजामहे स्वाहा

॥ इति दादाजी की लघु अष्टप्रकारी पूजा सम्पूर्ण ॥

(१)

विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली । शुभयोगे पुण्यदशा सफली
जिन कुशल सूरिगुरु अतुलबली । मन वञ्छित आप रंगरली

(२)

मगल लील समे विपुला । नवनव महोत्सव राज्यकला
सुपसाये गुरु चढती कला । सुकुलिणी पुत्रवती महिला

(३)

सनही मिल थाये सवरा । सदवाय कपूर तणा कुरला
हयगय रथ पायक बहुला । कलोल करे मदिर कमला

(४)

विझे चमर निशान धुरे । नरने अरनार खडा पडूरे
जय २ कर जोडी उच्चरे । सानिध्य गुरु सब काज सरे

( )

सरसा भोजन पान मना । दुख रोग दुष्काल न होय कना
अविचल उदय अग मुदा । गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा

(६)

। २ मादल नाद घूमे। बत्तीसे नाटक रग रमे ॥
...ा पुण्य प्रताप हमें। मनला अरियणते आयनमे ॥

(७)

...न उन मन सुन चीरतने। पहिरे वेलाउल होय रणे ॥
...यावो कुशल गुरु एक मने। जृंभक सुर मन्दिर भरे धने ॥

(८)

...त विण घन सच्चौ आवे। करि श्याम घटा मेह वरसावै ॥
...िसिया ताय तुरत पावे। जल्पाता नि...ग सुजस गावे ॥

(९)

...लहरयाँ जल कल्लोल करे। प्रवहण भय मायर म यटरे ॥
...डूबता वाहण जे समरे। ते आपद निश्चयसे उतरे ॥

(१०)

...गट २ खड्ग प्रहार वहे। सौदामिनी जिम समसेर सहे ॥
...ुशल २ गुरु नाम कहे। ते क्षेमकुशल रणमध्य लहे ॥

(११)

शुभ सफल परचा पूरे। श्री नागपुरे सङ्कट चूरे ॥
मङ्गलीरे अधिके नूरे। देरा डर भय टाले दूरे ॥

(१२)

वीरमपुर वाने सुधरे। समाइत पुर विक्रम नयरे ॥
जिनचन्द सूरि पाटे पवरे। जसु कीरति मही मण्डल प्रसरे ॥

(१३)

पूर्व पश्चिम दक्षिण आगे। उत्तर गुरु दीपे सौभागे
दहदिशि जन सेवा मागे। श्री खरतरगच्छ महिमा जागे।

(१४)

पुर पट्टन जनपद ठामे, । गाडने कुशल नयर गामे
पूजे जे नर हित कामे। ते चक्रवर्ती पदवी पामे

(१५)

श्रीजिन कुशल सूरि सारे। सेवक जन ने सुखिया राखे
समज्या गुरु रसन दाखे। श्री साधु कीर्ति पाठक भाखे

— * * —

प्रभात फेरी–१

(तर्ज–झंडा ऊँचा रहे हमारा)।

श्री जिनदत्त जगत रखवारे
जय गुरु जय गुरुदेव हमारे।
ज्योतिर्धर जीवन उजियारे,
— गुरु जय गुरुदेव हमारे॥ टेर॥

वर्द्धमान प्रभु पाट परम्पर,
शासन थंभ समान शुभङ्कर ।
जग उपकारी जग के प्यारे,
जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥

देव - जिनेश्वर दर्शन-भावन,
प्रवर प्रचारक जीवन पावन ।
प्राणिमात्र के हित - सुखकारे,
जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥

नव - अंग टीकाकार प्रशिष्य,
श्री जिन वल्लभ सद्गुर शिष्य
अतिशय मय निर्भय अविकारे,
जय गुर जय गुरुदेव हमारे ॥

मन्त्री वाछिगसाह जनक धन,
वाहटदेवी माता धन धन ।
जिन वल्लभ गुर धन अवतारे,
जय गुर जय गुरुदेव हमारे ॥

एक लाख पर तीस हजारा,
किये जैन जिन - धर्म प्रचारा ।
दुर्व्यसनों को दूर निवारे,
जय गुर जय गुरुदेव हमारे ॥

ग्राम नगर पुर भारत भर में,
सद्गुरु परसिध है घर घर में ।
दादावाडी दरश हमारे,
जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥

सवन् बाहर सौ ग्यारह में,
अषाढ़ सुद एकादशी दिन में ।
तारणहारे स्वर्ग - सिधारे ,
जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥

आठ शताब्दी आज है पूरण,
गुरु कृपा हों इच्छित पूरण ।
जन जन मिल जयनाद उचारें,
जय गुरु जय गुरुदेव हमारे ॥

— * —

प्रभात - फेरी–२

(तर्ज—जय रघुनन्दन जय सियाराम)

ॐ अर्हं जय हे गुरुदेव
श्री जिनदत्त परम गुरुदेव
चरण शरण दो हे गुरुदेव
ॐ अर्हं जय हे गुरुदेव ॥ टेर ॥

गाओ पधारो हे गुरुदेव
दो दर्शन दादा गुरुदेव
आठ शती बीती गुरुदेव
अब दर्शन दो आ स्वयमेव ॥ ॐ अर्हं ॥

कायरता हमसे हो दूर
हममें चमके भारी नूर
यही हमारा इच्छित देव
दो दर्शन दादा गुरुदेव ॥ ॐ अर्हं ॥

दुर्व्यसनों से हों हम दूर
घर घर में सुख हो भरपूर
करो कृपा अब हे गुरुदेव
आओ पधारो हे गुरुदेव ॥ ॐ अर्हं ॥

संघ शक्ति से हों बलवान
ज्ञानवान गुणवान महान
सुनो सुनो दादा गुरुदेव
दो वरदान हमें नितमेव ॥ ॐ अर्हं ॥

जय गुरुदेव जय गुरुदेव
जय गुरुदेव जय गुरुदेव
जिन वल्लभ पटधर गुरुदेव
जय जिनदत्त परम गुरुदेव ॥ ॐ अर्हं ॥

गुरु जिनदत्त की महिमा

(तर्ज—कहां हसना कहीं रोना इसीका नाम दुनिया है।)

गुरु जिनदत्त की महिमा-बतायें हम कहो कैसे।
चमकती दिव्य ज्योति को बतायें हम कहो कैसे ॥ टेर।

कहें गर चांद तो उसमें हमेशा दाग दिखता है।
सदा बेदाग गुरुमहिमा बतायें हम कहो कैसे॥

कहें गर सूर्य तो उसमें भरा सन्ताप भारी है।
गुरु सन्ताप हर महिमा बतायें हम कहो कैसे॥

कहें गर हम समुंदर तो भरा है खार ही उसमें।
परम अमरित गुरु महिमा-बतायें हम कहो कैसे॥

कहें गर हम सुमेरु तो-बना है रजकणों से वह।
रजोगुण मुक्त गुरु महिमा-बतायें हम कहो कैसे॥

गुरु जैसे गुरु ही हैं-गुरु जिनदत्त उपकारी।
जयन्ती आज है महिमा-बतायें हम कहो कैसे॥

गुरुजी जैन मंडल की विनतियां आप सुन लेना।
कवीन्द्रों की जबानों से-बतायें हम कहो कैसे॥

स्तोत्र

स्वाय श्री जिनदत्त सूरी, गुणाकर किंनर पूज्यपाद ।
र्णीश्वर तुष्टि कर स्वरूप, लावण्य गात्र बहु सौख्यकार ॥

ग नरा ये प्रणमति नित्य, तेषामपीपा सफली कराति ।
र्लीयशारा नरतिप्रसूते, विद्यारर श्री लक्ष्मी सुयानि ॥

यन्या नरा ये तव पाद सेवा, कुर्वन्ति सत्पुत्र लभन एव ।
न दुःख दौर्भाग्य भय न मारी, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरि ॥

वरि स्वबुध्या गुरु मन्त्रिमोऽपि, नाम्ते गुणान् वर्णयितु समर्थ ॥
तथापि लब्धकिरतो मुनीन्द्र ! करोमि किंचिद्गुण वर्णन ते ॥

महार्णवे भूवर सम्नकेऽपि, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरि ।
सुखै सहायान्ति जना स्वधाम्नि, ततो भवन्त प्रणमामि काम ॥

जैनाठन सबोधन पूर्णचन्द्र, सत्सेवक कामित कल्पवृक्ष ।
युगप्रधानस्तुतमाधुसूरिं, सूरीश्वर श्रीजिनदत्तसूरि ॥

न रोगशोका रिपुभूतयक्षा, न च ग्रहा राक्षसवैरापा ।
न पीडयन्ति तव नाममन्त्रात तस्मात्त्रराणा शिवदायकस्त्वम् ॥

इत्थ गुरोरष्टकमुत्तम यो, प्रभातकाले प्रपठेत्सदैव ।
किं दुर्लभ तस्य जगत्त्रयेऽपि, सिध्यति सर्वाणि समीहितानि ॥

॥ इति ॥

सुरा सर्वासपद्मसनि पन्यार्थिम्य वदने ।
विनिद्रा वागीशा हृन्यस्मते सन्निधिक्म् ॥

विराग सर्वाङ्गिष्वपि च भगवद्भक्तिरनिश ।
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥

निशि स्वायाधीन निशादिनमदीनौ समथिना ।
पर वाणीलक्ष्म्यार्निलयमपि तद्दाननिपुणौ ॥

सदायौ वर्तते जयत इव पाथायुगल ।
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥

क्षिपन्तौ तौ प्रेक्षा सरसिरुहयोर्यौ मृदुलयो ।
जैपापुष्पाभासौ किसलय विनाशेष महसो
लसल्लेखाल मप्रकटिनपर श्रीसनयो
समृद्धयर्थं वन्दे कुशल गुरुदेवस्य चरणौ ॥

सुरेभ्य स्वस्येभ्य कतिपयदिनैर्य फलमथो ।
कदाचिद्देद्राक् श्रियमपि लद्भिाय परमाम् ॥

सुरेन्द्र न्यत्कोपासतइति बुधौ यौ भुवि गतौ ।
समृद्धयर्थं वन्दे कुशल गुरुदेवस्य चरणौ ॥

सुरैराम्याचन्ते परमगुरु धर्मापदिशत ।
सदा काम पीतामृतरसवराशैरपि गिर ॥

श्रुता यस्य श्रेय श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधिया ।
समृद्धयर्थं वन्दे कुशल गुरुदेवस्य चरणौ

ॐ ह्रा अर्हं श्रीजिनकुशल सूरिभ्यो नम ॐ ह्रा श्री अर्हं श्रीजि
सूरिभ्यो नम ॥

* श्री दादा गुरु स्तुति संग्रह *

(श्लोक)

दासानु दासा इव सर्व देवा, यदीय पादाब्ज तले लुठन्ति ।
मरुस्थली कल्पतरु स जीयात् युग प्रधानो जिनदत्त सूरि ॥ १ ॥

चिन्तामणि कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्ति भव्या किमुकाम गव्या । प्रसीदत श्री जिनदत्त सूरे सर्वे पद हन्तिपदे प्रविष्टम ॥ २ ॥

नो यागी न च योगिनी न च नराधीनश्च ना शाकिनी ।
ना वेताल पिशाच राक्षस गणा नो रोग शोकौ भयम् ।
नो मारी न च निग्रह-प्रभृतय प्रीत्या प्राणत्याचकै ।
यो वै श्री जिनदत्त सूरिगुरवो ! नामाक्षारध्यायति ॥ ३ ॥

(सवैया)

बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगिनी पाय लगाई ।
डाइन साइन व्यन्तर खेचर भूत र प्रेत पिशाच पुलाई ॥
बीज तटक कडक भडक अटक रहे जु खटक न काई ।
कहे धर्ममिद लघे कुण वीर [illegible] की [illegible]

गाजे धुम ठौर ठौर एसो देव नहीं और,
गाढो दादो नाम से जगत जश गायो है ।
अपने ही भाव आय पूजे स्वरग लोक पाय,
प्यासन को रनमाझ पानी आन पायो है ॥

घाट घाट शत्रु ठाट हाटपुर पाटन में,
देह गेह नेह से कुशल वरसायो है ।
धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे,
साचा श्रीजिन कुशलसूरि नाम यूं कहाया है ॥

दादा गुरु स्तोत्र

(तर्ज—सुख सर्वा सपद शिखरिणी वृत्त)

गुणी ज्ञानी दाता शिव सुख विधाता भुवन में,
नहीं है कोई भी गुरुवर तुही है बस तुही ।
तुही माता तातानुपम गुण भ्राता हितु-सखा,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ १ ॥

तजे मैंने सारे कुपथ मतवाले कुगुरु जो,
महा मायावी हैं विषय रसरागी मलिन हैं ।
मिला स्वामी तूही सुविहित-हितैषी यतिपते,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ २ ॥

तुही ज्ञाता ध्याता निरमन यशो विस्तृत विधि,
प्रभावी नेता है खरतरगराचार्य विदित।
महा पापी हू मै पतितपथगामी तदपि हे—
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ ३ ॥

सुनी जानी तेरी परम उपकारी सु महिमा,
पुरे ग्रामे देखे मम विनय भी एक सुन लो।
न होउ दु खों से विचलित यही नाथ वरदो,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ ४ ॥

हटाये लोगों का व्यसन गणसे देव तुमने,
सुशिक्षा दे स्वामी महिर मुझ पे भी अब करा
समर्थों को जो भी विकट विधि है वे सहज हैं,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ ५ ॥

उपेक्षा जो मेरी कथमपि करोगे युगवर !,
सहारा कोई भी फिर न मुझको है जगत में।
सुनाता हू यातें प्रभुवर सुनो कान धरके,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ ६ ॥

न है कोई ज्योति हृदय तम भेदी गुरु बिना,
न है कोइ दानी परम पद दायी गुरु बिना।

अपापी पापो को सुगुरु हरते है, इस लिये,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ ७ ॥

सुखाम्भोधे स्वामी परम करुणा सिन्धु भगवन् !
रहू सेवा में मै यह बस मुझे नाथ वरदो ।
कर्ता भी होऊँ मै प्रणत हरि पूज्य प्रभुवर !
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे ॥ ८ ॥

— * —

* श्री गुरुदेव स्तवन सग्रह *

— * —

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—वीर बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम)

दादा देव दयालु तुमको लाखों प्रणाम ।
श्री गुरुदेव दयामय तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥
व्यामत का मैल मिटाकर, बोधि लाभ शुभ हमको देकर ।
ा बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ दा० १ ॥
म मत्र की महिमा भारी, विपति विदारण सपतिकारी ।
गीश्वर गुणवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ दा० २ ॥

युगवर गुणसागर उपकारी, हरि जिन शासन में जयकारी।
दर्शन देने वाले तुमको हमारा प्रणाम ॥ ना० २ ॥

श्री गुरुदेव स्तवन

(कल्याणी)

क्या हूँ अपूर्व दर्शन, गुरुदेव जी तुम्हारे ॥
दुःख दूर कीजिये सब, हम भक्त हैं तुम्हारे ॥ टेर ॥

गुरु के बिना जगत में, है कौन मार्ग दर्शक।
आया शरण में स्वामी, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ १ ॥

चिंतामणी से बढ़कर, मनइच्छितार्थ दानी।
सानी न और जगमें, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ २ ॥

हरि पूज्य जैन शासन, पावन प्रकाश धारी।
चाहूं सदैव दर्शन गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ ३ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—जय बोलो पास जिनेश्वर की)

दर्शन दो श्री गुरुदेव हम दर्शन को ॥ टेर ॥

गुरु दर्शन बिन तरस रहे हम।
दो दर्शन गुरुदेव हमें ॥ दर्शन० ॥ १ ॥

तुम पथ के हम पथिक सभी हैं।
निज पथ देव दिखा दो हमें ॥ दर्शन० ॥ २ ॥

चन्द्र चकोर मोर जिम बादल।
तिम तुम दर्शन चाह हमें ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥

विकसित होत कमल रवि-दर्शन।
तिम तुम दर्शन हर्ष हमें ॥ दर्शन० ॥ ४ ॥

'हरिजिन' शासन भाव प्रकाशन।
आत्म प्रकाश दिखादो हमें ॥ दर्शन० ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—मैं बनकी चिडिया बनकर बन २ डोलूँ रे)

श्री दादा गुरु का हिलम ध्यान लगाऊँरे।
जिनदत्त सूरी दादा गुरु के गुण गाऊँ रे ॥ टेर ॥

गुरुदत्त जगत जयकारी, शुभ नाम मंत्र सुखकारी।
गुरुदत्त सत्य गुणधाम नित्य निज मन मंदिर में लाऊँरे
॥ श्री दादा० १ ॥

दादागुरु आप पधारो, सेवक के काज सुधारो।
गुरु दर्श-हर्ष पावन प्रकर्ष-में अपने में लय पाऊँरे ॥
॥ श्री दादा० २ ॥

गुरु गुनसागर भगवाना, हरि सागर गुरु समाना।
गुण भूप-रूप करके अनुग्रदर्शन दुख दूर गमाजे रे
श्री दादा० ३ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु है आधार)

दातार मेरे प्यारे, दादा गुरु है दातार ॥ टेर ॥

दच सूरीश्वर दादा गुरु है, युगप्रधान के अवतार।
अवतार मेरे प्यारे दादा गुरु हैं दातार ॥ १ ॥

निपुत्रियों को सुपुत्र देते, निर्धन को धनके भंडार।
भंडार मेरे प्यारे दादा गुरु है दातार ॥ २ ॥

रोगी कुरूप के रोग मिटावे पल्दी में रूप सुधार।
सुधार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ३ ॥

निर्बुद्धियों में बुद्धि प्रगटाते, करते सुबुद्धि प्रचार।
प्रचार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ४ ॥

सेवा मधुर करी सुरगण नायक, 'हरि' करे जयकार।
जयकार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(सांवरो सुखदाई जाकी छवि वरणी न जाई)

(राग बसंत होरी)

परम गुरु सेवा पाई, निजातम ज्योति जगाई ॥ टेर ॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर दादा, महिमा जिनकी सवाई।
सेवा करते सेवक जिनकी, विघ्न दूर हटाई ॥
गुरु मेरे है वरदाई ॥ परम० १ ॥

गढ गिरनार पे नागदेव को, लिखदे अम्बा माई।
युगवर मरुधर सुरतरु जैसे, वाछित सुख फल दाई ॥
सेवे सुर शीश नँवाई ॥ परम० २ ॥

वीर पीर अरु जोगणिया सब, जो छलने को आई।
गुरु के ब्रह्म-योग बलिहारी, देवें नित्य दुहाई ॥
गुरु जग कीर्ति जमाई ॥ परम० ३ ॥

देश देश में थुम्भ बिराजे, परचा प्रगट सवाई।
सुखसागर भगवान महोदय, पूजो गुरु होके अमाई ॥
सदा गुरु होत सहाई ॥ प—

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(राग—सहाना धमाल)

श्रीजिनदत्त सूरींदा, परम गुरु श्री जिनदत्त सूरींदा ।

परम दयाल दयाकर दीजे दरशण परमानन्दा ॥ परम० १ ॥
जङ्गम सुरतरु वांछित दायक, सेवक जन सुखकन्दा ॥ परम० २ ॥
सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुख दन्दा ॥ परम० ३ ॥
निज पद सेवक सानिध कारी राखिये गुरु राजिन्दा ॥ परम० ४ ॥
कर जोरी विनय युत विनवे श्रीजिन हरख सुरींदा ॥ परम० ५ ॥

॥ दादा कुशल गुरु स्तवन ॥

– १ –

[गजल]

कुशल करना कुशल करना, कुशल गुरुराज शासन में ।
तुम्हा हो शक्तिमय जिनभक्त, विघ्नों के विनाशन में । टेर ।
महा अंधेर में सोते, निरखलो अपने भक्तों को ।
उठाकर आप अब जल्दी, लिया लो प्रकाशन में । कु १ ।
अपूरव अपनी ज्योति का, दिखावें आप अब जल्वा ।
कि जिसमें जोश भी फैले, हमेशा खूब तन-मन में । कु २ ।
हैं भूले भक्त पर तुमको, भुलाना यों न लाजिम है ।
दुआ है आपसे इतनी, बढादो भक्त जन धर्म में । कु ३ ।

सदा "हरि" आपकी स्वामी, दया की वेल भक्तों प ।
करे छाया, हरे माया, अशान्ति हो न जीवन में। कु ४ ।

— २ —

[गजल]

कुशल गुरु क्यों न देते हो, कहो दर्शन मुझे अपना ।
अगरचे दूर रहना था, वनाया दास क्यों अपना ॥

जलीलों को जगाना ही, अगर मजूर है तुमको ।
विरुद तन दीनबन्धु का, रखा, फिर नाथ क्यो अपना ॥

तुमारा मैं हुआ जब से, सदा तबसे तडफता हूँ ।
न तडफाना तुम्हें लाजिम, शरन दो देव अब अपना ॥

मुसीबत मेट दो मेरी, दरश दो क्यो करो देरी? ।
गुजारिश है कवीन्दर की, निभालो नेह बस अपना ॥

— ३ —

(तर्ज—बोल वन्देमातरम्)

आपके दर्शन बिना गुरुवर ' रहा जाता नहीं ।
और दिल का हाल गैरों से कहा जाता नहीं ॥

है परेशानी यही कैसे तुम्हें पाऊँ गुरो ।
पथ ऐसा एक भी मेरी नजर आता नहीं ॥

हैं जुदाई के निगर म नम्म भारी हो रहे ।
उनकी जलन का नाग भी मुझमे सहा जाता नहीं ॥
हैं कुशल गुर आप फिर क्यों देर इतनी हो रही ।
अब और आशा में प्रभा मुझसे रहा जाता नहीं ॥
'हरि' पूज्य गुरुवर दासकी अरदासको सुन लीजिये ।
मुक्तिदाता आप बिन बस और मन भाता नहीं ॥

— ४ —

[गजल]

कुशल गुरराज जय तेरी, बढाओ शक्तियाँ मेरी ॥ टेर ॥
हृदय म ध्यान धरता हूँ, उपाधि दूर करता हूँ ।
मै गाउ कीर्तिया तेरी, कुशल गुरराज जय तेरी ॥ १ ॥

सदा तुझ नाम लेकर के म करता काम हूँ जितने ।
सफल होते नहीं देखे, कुशल गुरराज जय तेरी ॥ २ ॥

है तेरे मत्र की शक्ति, अजायब विश्व में रोशन ।
मुझे उसका सहारा है, कुशल गुरराज जय तेरी ॥ ३ ॥

तुही सुख सिन्धु है भगवन् ! परम 'हरि' पूज्य उपकारी ।
सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरराज जय तेरी ॥ ४ ॥

॥ मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि स्तवन ॥

तुमतो भले विराजोजी,
मणिधारी महाराज दिल्ली में भले विराजोजी ॥ टेर ॥

नरनारी मिल मंदिर आवे, पूजा आन रचावे।
अष्ट द्रव्य पूजा में लावे, मन वांछित फल पावे ॥ तुम० १ ॥
आशापूरो संकट चूरो, ये हे बिरुद तुम्हारो।
आधि-व्याधि सब दूर नाशो, सुख सम्पत दे तारो ॥ तुम० २ ॥
वाद विवादे जन जय पावे, तारे जलधि जहाज।
वाट घाट भय पीडा भाँजे, समरण श्री गुरराज ॥ तुम० ३ ॥
पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति दीजें, भल भरजो भंडार ॥ तुम० ४ ॥
सेवक उपर करुणा करजो, महिर नजर तुम धरजो।
लक्ष्मी लीला घरमें भरजो, एतो काम तुम करजो ॥ तुम० ५ ॥

—: प्रभाति तेताला :—

मणि मस्तक पर दिपे जिनके, बडे हुये जयकारी जी।
श्री जिनचन्द्र सूरि मणियाले, गुण गावे नर नारी जी ॥
औरन को तो और भरोसा, मुझको शरण तुम्हारी जी ॥ १ ॥
जल चन्दन अरु पुष्प मनोहर, अक्षत उज्जवल कारी जी।
धूप दीप नैवेद्य आरति, पूजो फल विस्तारी जी ॥ २ ॥

उदयकर उदयकर, आज खरतर धनी।
सूरि जिनरङ्ग सेवक तुमारो ॥
सदा चढती कला, करो गुरु माहरी।
विषम वैरी छुडा दूर वारो ॥ कु० ॥ ४ ॥

समाप्त

॥ झिझोटी कहरवा ॥

आयो आयो समरता दादाजी ॥ आयो० ॥
सकट देख सेवककु सद्गुरु, डेरावर से धायोजी ॥ सम० ॥ १ ॥
बरसे मेघ ने रात अन्धेरी, वायु पण सबलो वायो।
पचनदी हम बैठे बेडी, डरिये चित्त डरायोजी ॥ सम० ॥ २ ॥
उच्च भणी पहुचावण आया, खरतर सघ सवायो।
समय सुन्दर कहे कुशल २ गुरु, परमानन्द सुख पायोजी ॥
॥ सम० ॥ ३ ॥

॥ सिंधुरा धमार । माड तेमाला ॥

हुतो मोहि रह्योजी माहरा राज, दादारे दरबार ॥ हु० ॥ टेर ॥
नरपति साहर पाय नमेजी, सुरनर मारे सेव।
ज्योति धारी जग जागतीरे, दुनिया म प्रत्यक्ष देव ॥ हु० ॥ १ ॥
केसर अगर केवडोजी कस्तुरी कर्पूर।
चपा चन्दन [illegible] चमेली, भक्ति करे भरपूर ॥ हु०

पागुरिया ने पान समापे, आधलीया ने आस।
रूपहीना ने रूप देवे दादो, पहुहीना ने पाग ॥ दु० ॥ ३ ॥
चन्द पटोधर माहिबोजी, श्री जिन कुशल सुरीन्द्र।
आठ पहोर थारो आलगुजी, रङ्ग गणे गजिन्द ॥ दु० ॥ ४ ॥

॥ प्रभाति ॥

सद्‌गुरु करुणा निधान, राखो लाज मेरी ॥ टेर ॥

जय जय जिन कुशल सूर, सुमरत हाजिर हजूर।
महकत जिम धन कपूर, महिमा जग तेरी ॥ सद० ॥ १ ॥

जापर तुमहो दयाल, तिनमें करत निहाल।
सकट को चूर देवा, दौलत की दरी ॥ सद० ॥ २ ॥

तुमहो सुरतरु समान, वछित फलदेवो दान।
सेवक को दीन जान, मेटो भवफेरी ॥ सद० ॥ ३ ॥

शरण आये की राखो लाज, वाछित सब पूरो काज।
हर्षचन्द्र शरण ग्रही, कीरति सुन तेरी ॥ सद० ॥ ४ ॥

॥ पुनः ॥

कैसे कैसे अवसर म गुरु राखी लाज हमारी।
मोको सबल भरोसा तेरा, चन्दसूरि पटधारी ॥कै०॥ १ ॥

तुम बिन और न कोई मेरे, यह जग में हितकारी।
मेरा जीवन हाथ तुम्हारे, देखो आप विचारी ॥कै०॥ २ ॥

आगे तो कई बार हमारी, चिन्ता दूर निवारी।
अब की बेर भूल मत जावो, सद्‌गुरु पर उपगारी ॥कें०॥ ३ ॥

अब की आप लाज गुनर की, रखिये गुरु यशधारी।
मेरे कुशल सूरीन्द गुरु तेरा, बड़ा भरोसा भारी ॥ के ॥

रेखता

कुशल गुरु देवके दरसन ॥ मेरा दिल होत है परसन ॥
जगत में या समो कोई ॥ न देखा नयन भर जोई ॥ कु० ॥

बिरुद भूमण्डले गाजे, फरसता पाप सब भाजे ॥
पूजता सम्पदा पावे ॥ अचिन्ति लक्ष्मी घर आवे ॥ कु० ॥

टकै मुख गुण कहु केना ॥ मुझेहिये ज्ञान नहीं पता ॥
लाल चन्द की अर्ज सुन लीनै, ॥ चरण की शरण माहि दिजे ॥

—: हिरजा की चाल :—

सद्‌गुरुजी माहरा, शरणे आया की लज्जा राखज्यो ॥ स० ॥
पतित उधारण बिरुद सुणीने, आयो तुमरे पास ॥
अब मन वछित पूरो मेरा, पहिज दिल की आशजी ॥स०॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ तजिने, तज दियो मन ममाग ॥
नवपद नो एक ध्यान धरीने, पाया सद्‌ गुण पारजी ॥स०॥ २ ॥
देश २ में थभ बिराजै, परचा जग विख्यात् ॥
इण कलि मांहे सुरतर सरिखा, प्रकट रह्या साक्षातजी ॥स०॥ ३ ॥

चितामणी और कामधेनु सम, मेरे तुमहीज देव ॥
आण धरू हु ताहरीनी, करू तुमारी सेवजी ॥ स० ॥ ४ ॥

मातपिता बन्धु तुम जग में हितकारी गुरु राय ॥
राजाराणा सहु जग माहे, सेवे तुम्हारा पायजी ॥ स० ॥

आज प्रभु तुम चरण पसाए, सिधा वछित काज ॥
लक्ष्मी प्रधान तुम्हारा दरशन मोहन गुण का रायजी ॥६॥

पुनः ।

गुरुदेव मनावो म्हारी मरुधरे दादा देवजी ॥ गु० ॥ टेर ॥
श्रीजिनचन्द्र पटोधर साहेब, श्रीजिनकुशल मुणीन्दा ॥
सुजस प्रगट है थारा जगम, जैसे पूनम चन्दाजी ॥ गु० ॥१॥
अष्टद्रव्यसे पूजा सारु, तुम देवन के देवा ॥
शरणागत प्रतिपाल जगतमें, नित्प्रति मागु सेवाजी ॥गु०॥२॥
सेवक जन मन वाछित पूरो, चिन्ता चूरो मेरी ॥
अष्ट सिद्धि सुख सम्पति पाया, मै सेवक तेराजी ॥गु०॥३॥
हृदय कमल में ध्यान लगावु, और देव नहीं ध्यावु ॥
पूरण कृपा करो गुरु मुझपर, जिम वाछितफल पाऊजी ॥गु०॥४॥
सेवक की यह अरज विनति, अवधारो महाराज ॥
दरसन सद्गुरु वेगा आपो, सिद्धि होय सेवक काजजी ॥गु०॥

॥ देशी चाल ॥

१

हारेलाल श्रीजिनदत्त सूरीश्वरु, दादो प्रह उगमतो सूर रे लाला ॥
भावधरी पूजो सदा घसी, कुंकुम भेलि कपूर रे लाला ॥ श्री० ॥

२

जीती चोसठ जोगनी, वस किया बावन वीरा रे लाला ॥
मन्त्रबले करी साधिया जिन, पचनदी पच पीर रे लाला ॥ श्री० ॥

३

हिंसाटाली जीवनी जड, सिन्धु सवालख देस रे लाला ॥
दानव मानव देवता माने, सहु आन नरेस रे लाला ॥ श्री० ॥

४

आज विषम पचम आरे, जेना मोठा अवदात रे लाला ॥
नामे न पडे विजली०, छल छिद्र तिल मात रे लाला ॥ श्री० ॥

५

युग प्रधान पद जेहने देवें, प्रत्यक्ष होई दीध रे लाला ॥
पुन्य पुरुष युग परगडो, जिन करणी उत्तम कीध रे लाला ॥ श्री०॥

६

प्रति बोध्या श्रावक श्राविका, मिल लाख सवा सहु देस रे लाला ॥
जैन धर्म दीपाविया, खरत्तर गच्छ कमल दिनेश रे लाला ॥ श्री० ॥

७

सवत बार अग्यारम, अषाढ शुक्लपक्ष जान रे लाला ॥
इग्यारस सदुगुरु तणो, अजमेर नगर निरवाण रे लाला ॥ श्री० ॥

८

भामित दायक कल्युगे, साची अवतार रे लाला ॥
समरण श्याम घटा करी २, महियल वरसे जलधार रे लाला ॥श्री०॥

९

महेर करी मुझ उपरे, गुरु पुर नगर निहाल रे लाला ॥
राज हरख कर जोड ने वन्दे, मन शुद्ध त्रिकाल रे लाला ॥श्री०॥

पुनः

१

हरिलाला श्रीजिन कुशल सूरीश्वर, सेवीने मन धर भाव रे लाला ॥
प्रत्यक्ष परचा पूरवे इण, कलियुग गुरु राय रे लाला ॥ श्री० ॥

२

केसर चन्दन घसी करी, नव नेवज करी उदार रे लाला ॥
॥ श्री० ॥

३

थम भलो देराउरे शोभा, बहु जेसलमेर रे लाला ॥
मुलताने मारोट में, गुरु साहे बीकानेर रे लाला ॥ श्री० ॥

४

योधपुरने मेडतें, जेतारण ने नागोर रे लाला
सोजत ने पालीपुर, जालोर ने श्री साचार रे लाला ॥ श्री० ॥

५

राजनगरने सूरते, खमायत पाटण माहि रे लाला ॥
शेत्रुंजे सोहे सदा, नवे नगर ने उछाह रे लाला ॥ श्री० ॥

६

इम पुर २ मे दीपा तो, दादाजी परतिख देव रे लाला ॥
इह एक आशा पूरवे तिण, जग सहु सारे सेव रे लाला ॥ श्री० ॥

७

नामे सकट सवि टले, तरस्या पावे नीर रे लाला ॥
रण में जे समरण करे सद्गुर होवे तसु भीर रे लाला ॥ श्री० ॥

८

एम महिमा जग जेहनी, जाणे सहुको नर नार रे लाला ॥
सुख सपति दे सेवका बहु पुत्र कल्ल परिवार रे लाला ॥ श्री० ॥

९

समज्या दरसन देइजे, ए सेवकनी करज्यो सार रे लाला
राजसागर कर जोडिने, विनवे वारम्वार रे लाला

—: दादाजी का स्तवन :—

(तर्ज —काली कमली वाले तुमको लाखो प्रणाम)

पर उपकारी दादा तुमको लाखो प्रणाम ॥ टेर ॥

शुद्धि का मारग दिखलाया, जैनेतर को जैन बनाया ॥
चारित्र गुण की खान, तुमको लाखो प्रणाम ॥ पर० ॥ १ ॥

दीन जनों के दुःख के चूरक, योग्य शक्ति के हो परिपूरक ॥
भूमण्डल यश धाम, तुमको लाखो प्रणाम ॥ पर०॥ २ ॥

जैन समाज को जागृत करदो, मिथ्यात्वी तिरस्कृत करदो ॥
गुरुवर विरुद प्रमाण, तुमको लाखो प्रणाम ॥ पर० ॥ ३ ॥

मन शुद्ध कर जो तुमको ध्यावे मन चिन्तित फल शीघ्र ही पावे ॥
शुभ दृष्टि तुम पास, तुमको लाखो प्रणाम ॥ पर० ॥ ४ ॥

स्वामी चरण शरण में आया, श्रीहरिपूज्य परम पद पाया ॥
"कान्तिसागर" अभिराम तुमको लाखो प्रणाम ॥ पर० ॥ ५ ॥

स्तवन

(तर्ज तुम तुम्ही चले परदेश, लगा कर ठेस०)

क्यु गये गुरु दिल तोड, हमे यहाँ छोड ॥
कहो मणिधारी आये है शरण तुम्हारी ॥ टेर ॥

लाखो को तुमने तारे है, हम भी तो भक्त तुम्हारे है ॥
अब तुम बिन स्वामी कौन करे रखवारी ॥ आये० ॥ १ ॥

इस मन ने मार्ग हटाया है, कष्ट में नाथ फँसाया है ॥
तुम बिन अब किसके होय सहारी ॥ आये ॥ २ ॥

घर घर मे बाट तुम्हारी है, भक्तों पर विपदा भारी है ॥
टक टकी लगाये देखे बाट तुम्हारी आये० ॥ ३ ॥

जब तुमको ऐसा करना था, क्यों इतना प्रेम बढाना था
तुम बिना "सूरज" कैसे हो भवपारी ॥आये० ॥४॥

स्तवन

इस दुनिया में तेरो यश छाय रह्योरे ॥ टेर ॥

अनुपम महिमा कान सुनी तुम ।
मनवछित फल पाय रह्यो ॥ इस० ॥ १ ॥

रान राज गुरुराज चिन्तामणि ।
सुरतरु छाया छाय रह्योरे ॥ इस० ॥ २ ॥

सजल मेघ ज्यु अमृत बूंदें,
भक्त हृदय बरसाय रह्योरे ॥ इस० ॥ ३ ॥

चरण न छोड्डु मुख नहा मोड्डु
तेरी लगन लय लाय रह्योरे ॥ इस० ॥ ४ ॥

राम धाम तू ही है सद्गुरु
घट में ज्योति जगाय रह्योरे ॥ इस० ॥ ५ ॥

श्री दादा गुरु स्तवन

(तर्ज —मेरे नाथ धुलेना धुगले मुझे)

— * —

तेरा अमृत प्याला पिलादो मुझे, तेरे अनुभव रग मे लगादो मुझे ॥ टेर ॥

मै तो परदे पर जमी के, तू रहा असमान में ॥
कैसे साहनत होय तेरी, नहीं मेरे आसान मे ॥
मेरा रात सदेशा न पहुँचे तुझे ॥ तेरा० ॥ १ ॥

अगर तू अरजी पै मरजी, करो मुझ पर कर रहम ॥
बदा अपना जान मन्दिर, दे दरस का दे महम ॥
एमा तेरा भरोसा है पूरा मुझे ॥ तेरा ॥ २ ॥

लौलगी किया उजेरा, पाक मोहब्बत के तणे
दीदार का पाया नफा जब, दूर हट गया दुख घणे
सब हासिल मेरी मिन्नत मुझे ॥ तेरा ॥ ३ ॥

वैन तेरे है रसीले नैन में रहमी भरी, ॥
शान्ति सूरत कुशल मूरत, दक्षगुर महिमा वरी ॥
शुद्ध मन से ध्यावत राम तुझे ॥ तेरा ॥ ४ ॥

॥ स्तवन ॥

(तर्ज —अनूठे प्रेमका)

— * —

कुशल गुरदेव के चरणों म शरण देना मुझे दादा ॥
खडी दरबार म आकर, बचा लेना मुझे दादा ॥ टेर ॥

अशुभ कर्मो ने घेरा है, बडा बेहाल मेरा है ॥
शीघ्र दुष्टों के फदा मे छुडा लेना मुझे दादा ॥ १ ॥

निराशा के अँधेरे म, पडा दिखता नहा कुछ भी ॥
उजाला शीघ्र आशा का, दिखा देना मुझे दादा ॥ २ ॥

मिली है ठोकरें मुझको, असफलता के पद पद पर ॥
मार्ग सिद्धि सफलता का बना देना मुझे दादा ॥ ३ ॥

दुखी हूँ दीन अबला हूँ, न रक्षक दूसरा कोई ॥
दया भिक्षा मै चाहती हूँ दीक्षा देना मुझे दादा ॥ ४ ॥

विमल आनन्द पद अनुपम, सुनिर्मल ज्ञान दे देना ॥
रहे उपयोग मे सज्जन, यही देना मुझे दादा ॥ ५ ॥

गुरुदेव स्तवन

(तर्ज —हीरा जडाऊँ थारी पोथी रे साचा जोसी, गुरसा मिलन कन हासी)

गुरुदेव मेरा, तुमही करोगे निसतारा, दादासा मेरा, तुमही करोगे निसतारा ॥

रिधि वृद्धि सुख सपतिदायक, रत्न चिन्तामणी मम उपकारक ॥
सूरि सकल में हो तुम नायक, युग वर वीर उचारा ॥ गुरु ॥

अनुपम कीरति तेरी पायी, श्री गुरुदेव बनो मेरे सहाई ॥
जीव रहो तुम चरण लुभाइ, क्यों कर मुझको विसारा ॥ गुरु ॥

दुखिया ने जब अरज गुजारी, लीनी खबर जब टेर सभारी ॥
चन्द्र सूर्य ज्यों ज्योति तुम्हारी, लाखों जन को उबारा ॥ गुरु ॥

राय राणा तुम आणा जमाने, कुमति कदाग्रह तुमको न जाणे ॥
वदन करत हैं हम एक ध्याने, रखिये लक्ष हमारा ॥ गुरु ॥

गुरु देव मेरा तुमही करोगे निसतारा ॥ इति ॥

गुरुदेव स्तवन

गुरु देव तुम्हारी कीरति सुनकर, तन मन अति हरषाय ॥

तुम कीरति पुनित सुगंगा, फरसे जो भविजन अंगा ॥
सब पाप ताप कर भंगा, गंगा से भी अधिक सुखदाय ॥ १ ॥

तुम कीरति पूरण गीता, अमृत सम जो नर पीता ॥
ताका सब होय सुभीता, नर भी दिव्य अमर बन जाय ॥ २ ॥

तुम कीरति कल्प लतासी, निमक हो चित्त विकासी ॥
सब सपति ताकी दासी, सारे शूल फूल हो जाय ॥ ३ ॥

तुम कीरति सूर्य प्रभासेवि, मिथ्यामति धूक विनाशे ॥
परमोदय प्रकट विकासे, भविजन हृदय कमल विकसाय ।

गुरु कुशल कुशल कर आज, हे मालपुरे शिर ताज ॥
हरि पूज्य सु गरीब निवाज, तेरी कीर्ति कवीन्द्रसु गाय ॥

गुरुदेव तुमारी कीरति सुनकर तन मन अति हर्षाय ॥

—: श्री गुरुदेव स्तवन :—

(तर्ज —सरोता कहाँ भूल गये)

दया कर दरस दीजे, प्यारे गुरुदेवा ॥
चरणों में मुझको शरणा दीजे, प्यारे गुरुदेवा ॥ टेर ॥

चिन्तामणी और कामधेनु सम, मेरे तुम हीन देवा ॥
राजा राणा भरे हाजरी, करे तुम्हारी सेवा ॥ दया कर० ॥ १ ॥

गुल्मन गुल का हार बनाऊँ, धूप सुगन्धी सेवा ॥
सुरनर गुणी जन करे आरती, भोग लगावे मेवा ॥ दया कर० ॥२॥

जिनदत्त जिनचंद कुशल सूरीगुरु, तुमसे लगाऊ नेहा ॥
पड़ी नाव मझदार बीच में, पार लगावे देवा ॥ दया कर० ॥३॥

श्री गुरुराज लाज रख साहिब, टेत तुम्हारी दूवा ॥
और देव सब छोड के दादा, चरणे आपका टूवा ॥ दया कर० ॥

'**चारित्र**' की जब विनती सुनीजे, दरसन वहिलो दीजे, ॥
सब कष्टों को दूर हटाकर, मन वांछित फल दीजे, ॥ दया कर० ॥

—: श्री गुरुदेव स्तवन :—

(तर्ज —सीता माता की गादी मेहनुमत टारी मुन्डी)

दर्शन दीजो जी सद्गुरुजी, अपने दास को जी ॥ टेर ॥

दर्शन दर्शन करता आया, दर्शन मालपुरे में पाया ॥
दिल म आनन्द हर्ष न माया ॥
आशा सफल करो गुरुराया, दर्शन दीजीये जी ॥ १ ॥

अबतो पूरो मनसा हमारी, तन मन तुम चरनन परवारी ॥
सिर पर आना आपकी धारी ॥
दादा राखो लाज हमारी, देर न कीजिये जी ॥ २ ॥

दादा तुम हो पर उपकारी, दीने अपना विरद विचारी ॥
इच्छा पूर्ण करो हमारी ॥
सेवक अर्जी को स्वीकारी, जग जश लीजिये जी

पहिले शर्मों भक्त उबारो, दुखीजन के दुख को टारे ॥
सेवक जन के काज सुधारे ॥
श्री जिन कुशल सूरि रखवारे, रक्षा कीजिये जी ॥ ४ ॥

उन्नीसे सत्यासी आया, निर्वाण दिन में हरिगुण गाया ॥
मंगल दिन में मंगल छाया ॥
सब के मन का ताप बुझाया, शिवसुख दीजिये जी ॥५॥

—: श्री गुरुदेव स्तवन :—

(तर्ज —जब तुम्हीं चले परदेश)

श्री उपकारी गुरुदेव, करो भवि सेव, ॥ कुशल जो चाहो
श्री कुशल सूरी को ध्यावो ॥ टेर ॥

मन्मथ के विजयी श्री गुरु है, आठों कर्मों के जयी गुरु हैं ॥
गुण सागर,कुल के उजागरके गुण गाओ ॥ श्री कुशल० ॥ १ ॥

रथ फेरी नासुदीना की, तज हिंसा, मन से अहिंसा ली ॥
कुत्सित म्लेच्छों को दे प्रतिबोध सदा हो ॥ श्री कुशल० ॥ २ ॥

शशि सम निर्मल आभा वाले, "समियाणा" पुर के उजियाले ॥
लक्ष्मीधर "जेल्हागर" के पुत्र कहाओ ॥ श्री कुशल० ॥ ३ ॥

सूरज सम तेज भरा भारी, है "जयतसिरी" गुरु महतारी ॥
रिपु भी गुरु सन्मुख नतमस्तक होता हो ॥ श्री कुशल० ॥ ४ ॥

" महाऽमम्या " फाल्गुन में गुरु की, निर्वाण जयन्ति सद्गुरु की ॥
हाजिर हजूर है भवि गुर अब भी आना ॥ श्री कुशल० ॥ ५ ॥

रानेश्वर सम गुर जग के थे, कई देवी देवता वश में थे ॥
जय जय का नारा गुरु का " मदन " लगाओ ॥श्री कुशल०॥६॥

—: श्री गुरुदेव स्तवन :—

(तर्ज —प्रभु का नाम लेने से)

स्यामय मेहुँला आने, अहीं बरसाव जो दादा ॥
थयेलु शुष्क जीवन वन, वली सरसाव जो दादा ॥

हृदय भूमि थई नीरस, त्रिविध सतापना योगे ॥
सरस रस पूर झरनारो, तमे प्रगटावजो दादा ॥

हमेशा थाय नव सरजन, बने आत्मी नव जीवन ॥
पुनित आदर्श ते पोते, तमे समझावजो दादा ॥

रजो गुण डुँगर जेवा, सुजनता ने सतावे छे ॥
बधाते प्रेम पानी थी वहावी नाख जो दादा ॥

सगुरु जिनदत्त सूरीश्वर, विनय युत वदना साथे ॥
कविन्द्रों नी विनन्ती आ, तमे अवधारजो दादा ॥

॥ स्त्री भरतार सम्वाद ॥

* दोहा *

बुद्धिमती तू श्राविका, भ्रम भुलानी आन ॥
कहाँ चली मेरी प्रिया, क्यु तन के गहवान ॥ १ ॥

सोमवार पूनम दिवस, मै जाती गुरुद्वार ॥
आप पधारो कन्तजी, ज्यु पावो भवपार ॥ २ ॥

पत्थर पूजन क्यों चली कहाँ तेरे गुरराय ॥
सुख मागो ससार को, यह परतिख मुखदाय ॥ ३ ॥

देव गुरु के दरश विन, मिले न सुख ससार ॥
नास्तिक बुद्धि त्यागकर, गुरु भक्ति ले धार ॥ ४ ॥

— राग माड —

स्त्री —मेरे कन्त सनेही, अरजी एही पूजन दो गुरुराज ॥
भरतार —तू सुन्दर प्यारी, है मतवारी, नहीं परतिख गुरराज, ॥
स्त्री —कुगुरु के भरमाये प्रीतम, ऐसी मत कर बात ॥
दत्त कुशल जिनचन्द सूरीश्वर, दीप रहे साक्षात् ॥ मेरे० ॥
भरतार —धातु काष्ट पाषाणकी रे मूरति चरण देखात ॥
भोले नर केई भरम गये रे, रहते गुरु साक्षात् रे ॥
तू सुन्दर० ॥ २ ॥

स्त्री —किसको सूझे आरसी पिया, किमको तवा और छाज ॥
जैसी जिसकी भावना पिया, फले मनोरथ काज रे ॥ मेरे० ॥ ३ ॥

भरतार —कोई पीछा आया नहा है, वल जल हो गई ग्वाक ॥
क्यों तू भूली कामणीं रे, मेरा वचन चित्त राख रे ॥
तू सुन्दर० ॥ ४ ॥

स्त्री —नास्तिक मत के मानवी रे, नहीं माने परलोक ॥
जिन वचनामृत मै पीया रे, मेरे तो सारे ही थोकरे ॥
मेरे० ॥ ५ ॥

भरतार —तेरा वचन जब मानलू रे, मुझे मिले गुरु आय ॥
फिर तो कभी पलट्ट नहीं रे, ऐसा ध्यान लगाय रे ॥
तू सुन्दर० ॥ ६ ॥

स्त्री —देव भवन गुरुराज ते पिया, भक्तों के आधीन ॥
विपद विदारण सपत कारण, मन वछित मोहे दीनरे ॥
मेरे० ॥ ७ ॥

भरतार —टेर सुनी गुरुराज नीरे,प्रकटे माझल रात ॥
माँग-माँग मुख उच्चरे रे, देखा गुरु साक्षात रे ॥
तू सुन्दर० ॥ ८ ॥

स्त्री —अन धन सुत सुग सपदा रे, मन वाछित गुरुदान ॥
मै सेवक माफी करो रे, तुम सेवा इक ध्यान रे ॥
मेरे० ॥ ०

भरतार —शका तज गुर को भजो रे, चाढो फूल सुवास ॥
चिरजीव गुरुराज जी रे, राम चरण के दास रे ॥
॥ सुन सुन्दर प्यारी मत्मतवारी, है परतिख गुरराज ॥ १०

— * —

॥ श्री जिनदत्तसूरिस्तवनम् ॥

– गीतिका –

(तर्ज —चिन्ता चूर चिन्तामणि पास (प्रभो)

वन्दे सूरिवर जिनदत्तमहम् । योगख्याति नलेन सुशोभि मुखम् ॥ वन्दे० ॥ १ ॥

पद्मासनद्युति शोभितम् । श्वेताम्बरेणसमन्वितम् ॥
भक्तयानोमिजनार्चित पादयुगम् ॥ वन्दे० ॥ २ ॥

पीयुषसारसमोपदेशम् । प्राप्य मुग्धा मानवा ॥
ध्याये जीवदयानुरतम्प्रवरम् ॥ वन्दे० ॥ ३ ॥

विद्युद्धिमानविमर्दकम् । भूतादि सिद्धिसमन्वितम् ॥
ध्याये मिथ्याधम निशापहरम् ॥ वन्दे० ॥ ४ ॥

।ग्रागले जित भूतलम् । जिन शासन प्रबलान्वितम् ॥
ध्याये श्रीजिनधर्म विधु निमलम् ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥

ापाढ शुक्लैकादशी दिवसे वपु प्रविसर्जितम् ॥
ध्याये देववर जिनदत्तगुरम् ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

.वेश । सप्रति भारतम् । दु खे रनन्तै पीडितम् ॥
यत्न वारयितु कुरु तच्च शुभम् ॥ वन्दे० ॥ ७ ॥

नरस्तु भारतवर्ष मध्ये । तेऽवतार साम्प्रतम् ॥
याचे वैद्योदयचन्द्रस्सततम् ॥ वन्दे० ॥ ८ ॥

॥ गुरु गुण ॥

(तर्ज —प्रभु पूजा करवा जाइये)

ण मनरा गुर गुण गाना, गुरु गुण में ही रम जाना ॥
पूर गजाना, अन्तर धन का खुल जायगा ॥ सु० ॥ १ ॥

जो तू है गुरु का बन्दा, तो नहीं रहे दुख ददा ॥
सूरज चदा, सम तू स्वय बन जायगा ॥ सु० ॥ २ ॥

गुर ज्ञान बिना तू अधा, करता है उधा धधा ॥
कर्म निबधा, खाली तू गोता खायगा ॥ सु० ॥ ३ ॥

॥ सद्० ॥ कुशल सुरिन्द्र गुर आगले
एता भवि मिल भावना भावे हे माय ॥
चन्द फते मुनि नित नमे,
एतो परमानन्द सुख पावे हे माय ॥ ९ ॥

॥ सद्गुरु पूजण जावस्या० ॥

॥ दादा साहब का स्तवन ॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब, तुम हो पर उपगारी ॥
मैं वारि जाऊ तुम हो पर उपगारी ॥ टेर ॥

खरतरगच्छ नायक गुण लायक, जिनचन्द्रसूरि पटधारी ॥
॥ मैं वारि जाऊ० ॥ १ ॥

सत उद्धारण सुयश वधारण, भीड भजन अति भारी ॥
नाम तुमारा कुशल करण जग, वारि जाऊ वार हजारी ॥ २ ॥

जग वच्छल तुमही ही जगमें, (जगद्गुरु)
करुणा निधिकरतारी ॥

कहे जिन हर्ष मेरे सद्गुरु हो, हम है शरण तुमारी ॥३॥

॥ इति ॥

॥ श्री प्रथम - दादा शासन प्रभावक ॥

* श्री जिनदत्त सूरीश्वर सद्गुरु की आरती *

गारनि हर गुर आरनि कीजे, आगत्रिक दुखदामी ॥
ी जिनदत्त सूरीश्वर दादा, शाता दे अविरामी ॥ १ ॥

तीजे पद परमेष्ठि सामी, आचारज गुण धामी ॥
सीमन्धर जगदीश्वर वाणी, एक भवे शिवगामी ॥ २ ॥

वीर जिनेश्वर शासन वासित, सब सकल विशरामी ॥
युगवर अतिशय महिमा धारी, जग जश कीरति जामी ॥ ३ ॥

सेवा करते सुरनर नायक, श्री गुरुपद शिर नामी ॥
कलियुग म कल्प-द्रुम जैसे, वाञ्छितदे अभिरामी ॥ ४ ॥

जैनेतर जन जैन बनाये, सवा लक्ष सुख कामी ॥
शुद्धि का मारग दिखलाकर, दूर करे सब खामी ॥ ५ ॥

सुख सागर भगवान परम गुरु, पूजो पाप विरामी ॥
जिन सुर "गुणनायक" हरि कहते, श्री गुरु चरण नमामि ॥६॥

॥ मगल दीपक ॥

मगल मय गुरु मगल दीपक, मगल माला कारी ॥
मगल हित भविजन नित कीने, वरते मगल चारी ॥ १ ॥

॥ सद्० ॥ कुशल
एता भवि मिल ॰
चन्द फते मुनि निन
एतो परमानन्द सुख
॥ सद्गुरु पूजण

॥ दादा

श्री जिनदत्त सूरीश्वर स॥
मैं वारि जाऊ तुम हो ,
खरतरगच्छ नायक गुण ९

सत उद्धारण सुयश वधारण, भीड भ।
नाम तुमारो कुशल करण जग, वारि
जग वच्छल तुमही ही जगमें, (जगद्गुरु

कहे जिन हर्ष मेरे सद्गुरु हों, हम ह
॥ इति ॥

॥ श्री प्रथम - दादा शासन प्रभावक ॥

※ श्री जिनदत्त सूरीश्वर सद्गुरु की आरती ※

आरति हर गुर आरति कीजे, आगत्रिक दुखदामी ॥
श्री जिनदत्त सूरीश्वर दाता, शाता दे अविरामी ॥ १ ॥

तीजे पद परमेष्ठि स्वामी, आचारज गुण धामी ॥
सीमन्धर जगदीश्वर वाणी, एक भवे शिवगामी ॥ २ ॥

वीर जिनेश्वर शासन वासित, सघ सकल विशरामी ॥
युगवर अतिशय महिमा धारी, जग जश कीरति जामी ॥ ३ ॥

सेवा करते सुरनर नायक, श्री गुरुपद शिर नामी ॥
कलियुग मे कल्प-द्रुम जैसे, वाञ्छितदे अभिरामी ॥ ४ ॥

जैनेतर जन जैन बनाये, सवा लक्ष सुख कामी ॥
शुद्धि का मारग दिखलाकर, दूर करे सब खामी ॥ ५ ॥

सुख सागर भगवान परम गुरु, पूनो पाप निरामी ॥
नित सुर "गुणनायक "हरि कहते, श्री गुरु चरण नमामि ॥६

॥ मगल दीपक ॥

। कारी ॥

॥ सद्० ॥ कुशल सुरिन्द्र गुरु आगले
एतो मति मिल भावना भावे है माय ॥
चन्द फते मुनि नित नमे,
एतो परमानन्द सुख पावे है माय ॥ ९ ॥

॥ सद्गुर पूजण जावस्या० ॥

॥ दादा साहब का स्तवन ॥

श्री जिनदत्त सूरीश्वर साहिब, तुम हो पर उपगारी ॥
मैं वारि जाऊ तुम हो पर उपगारी ॥ टेर ॥

खरतरगच्छ नायक गुण लायक, जिनचन्द्रसूरि पटधारी ॥
॥ मैं वारि जाऊ० ॥ १ ॥

सत उद्धारण सुयश वधारण, भीड भनन अति भारी ॥
नाम तुमारो कुशल करण जग, वारि जाऊ वार हजारी ॥ २ ॥

जग वच्छल तुमही ही जगमे, (जगद्गुर)
करुणा निधिकरतारी

कहे जिन हर्ष मेरे सद्गुर हो, हम हैं शरण तुमारी ॥३॥

॥ इति ॥

श्री

तृतीय दादा परम प्रभावक श्री जिन कुशल सद्गुरु की

आरती

जय जय गुरुदेवा, सेवा दे सुख मेवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरुदेवा ॥ टेर ॥

आरती हरणी आरति गुर की, पावन पद देवा ॥
परम कुशल करणी गुरु चरणी, सद्गुर पद सेवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरुदेवा ॥ १ ॥

गुरु दीपक गुरु रवि शशि ज्योति, जगत में सुरग देवा ॥
हृदय तिमिर भय दूर निवारे, दिव्य नूर चमके वा ॥
॥ ॐ जय जय गुरुदेवा ॥ २ ॥

जिन हरि पूज्य कुशल गुर दादा, निर्भय समरे वा ॥
वाछित पूरे सकट चूरे, सब देवौं—देवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरु देवा ॥ ३

सद्गुर मगल दीपक ज्योति, हृन्य तिमिर दे टारी ॥
पाय पतग विनाशक आतम, पुन्य प्रकाशक भारी ॥ २ ॥
सुख सागर भगवान परम गुर, मंगे अमगल हारी ॥
मगल दीपक करते सुर "गणनायक" हरि जयकारी ॥३॥

※ श्री ※

द्वितीय दादा नर मणि मण्डित भालस्थल

—: श्री जिनचन्द्रसूरीश्वर सद्गुरु की आरती :—

जय जय मणि धारी जग जन उपकारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ टेर ॥
शासन थम समाना सद्गुरु, आरति हितकारी ॥
दिल्ही में दरसन कर परसन, होंवे नर नारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ १ ॥
मदनपाल नरपति प्रतिबोधक-सघ वृद्धि कारी ॥
महतियाणा महती जाति स, समकित हितकारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ २ ॥
जिन हरि पूज्य परम गुर शरणा, भव-भव सुखकारी ॥
पाउ, पूजू पुण्य योग से, जय मगल कारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ ३ ॥

इति सम्पूर्ण

श्री

तृतीय दादा परम प्रभावक श्री जिन कुशल सद्गुर की

आरती

जय जय गुरुदेवा, मेवा दे सुख मेवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरुदेवा ॥ टेर ॥

आरती हरणी आरति गुरु की, पावन पद देवा ॥
परम कुशल करणी गुरु चरणी, सद्गुर पद सेवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरुदेवा ॥ १ ॥

गुरु दीपक गुरु रवि शशि ज्योति, जगत में सुख देवा ॥
हृदय तिमिर भय दूर निवारे, दिव्य नूर चमके वा ॥
॥ ॐ जय जय गुरुदेवा ॥ २ ॥

जिन हरि पूज्य कुशल गुरु दादा, निर्भय समरे वा ॥
वाछित पूरे सकट चूरे, सब देवी—देवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरु देवा ॥ ३ ॥

सद्गुर मगल दीपक ज्योति, हृन्य तिमिर टे टारी ॥
पाय पतग विनाशक आतम, पुन्य प्रकाशक भारी ॥ २ ॥
सुख सागर भगवान परम गुरु, सर्व अमगल हारी ॥
मगल दीपक करते सुर "गणनायक" हरि जयकारी ॥३॥

* श्री *

द्वितीय दादा नर मणि मण्डित भालस्थल

—: श्री जिनचन्द्रसूरीश्वर सद्गुरु की आरती :—

जय जय मणि धारी जग जन उपकारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ टेर ॥

शासन धर्म समाना सद्गुरु, आरति हितकारी ॥
दिल्ही में दरसन कर परमन, होवें नर नारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ १ ॥

मदनपाल नरपति प्रतिबोधक-सघ वृद्धि कारी ॥
महतियाणा महती जाति में, समकित हितकारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ २ ॥

जिन हरि पूज्य परम गुरु शरणा, भव-भव सुखकारी ॥
पाउ, पूजू पुण्य योग से, जय मगल कारी ॥
॥ ॐ जय जय मणिधारी ॥ ३ ॥

इति सम्पूर्ण

श्री

तृतीय दादा परम प्रभावक श्री जिन कुशल सद्गुर की

आरती

जय जय गुरुदेवा, सेवा दे सुख मेवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरदेवा ॥ टेर ॥

आरती हरणी आरति गुर की, पावन पद देवा ॥
परम कुशल करणी गुरु नरणी, सद्गुर पद मेवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरदेवा ॥ १ ॥

गुरु दीपक गुरु रवि शशि ज्योति, जगत में सुख देवा ॥
हृदय तिमिर भय दूर निवारे, दिव्य नूर चमके वा ॥
॥ ॐ जय जय गुरदेवा ॥ २ ॥

जिन हरि पूज्य कुशल गुरु दादा, निर्भय समरे वा ॥
वाछित पूरे सकट चूरे, सन देवौ—देवा ॥
॥ ॐ जय जय गुरु देवा ॥ ३ ॥

श्री

चतुर्थ दादा युग प्रधान-श्री जिनचन्द्र सूरीश्वर सद्गुरु की

आरती

जय जय गुरु राया, पुण्योदय से पाया ॥
॥ ॐ जय जय गुरु राया ॥

अकबर भाव अहिंसक हेतु, सब जग सुखदाया ॥
आरति गुरु गुण जारनि कारी गावो तज माया ॥
॥ ॐ जय जय गुरु राया ॥ १ ॥

परम प्रभावक सद्गुरु श्रावक, कर्मयोग गाया ॥
सिद्ध और साधक की जोटी, कार्य सिद्ध पाया ॥
॥ ॐ जय जय गुरु राया ॥ २ ॥

ठाम ठाम गुरु थुभ विरोने, भवि पूजे पाया ॥
"जिनहरि" पूज्य परम गुरु पूजों पावो मन चाया ॥
॥ ॐ जय जय गुरु राया ॥ ३ ॥

इति सम्पूर्ण

Rathnam Press Madras-1